

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

धर्मपद

वार्षिक पत्रिका - 2024-25, तेरहवाँ अंक



प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर - 751017(ओडिशा)

‘धर्मपद’ के 12 वें अंक का विमोचन





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

धर्मपद

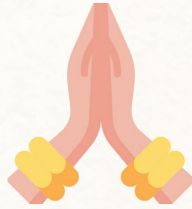
वर्ष 2024-25

अंक -13

अवधि - वार्षिक

में

हार्दिक अभिनंदन



प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

पूर्व तट रेलवे, उत्तर खंड, रेल सदन

सामंत विहार, चंद्रशेखरपुर

भुवनेश्वर-751017 (ओडिशा)

मूल्य-राजभाषा के प्रति निष्ठा

धर्मपद पत्रिका परिवार



संरक्षक

श्री अनूप फ्रांसिस डुंगडुंग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा



संपादक

सुश्री कीर्ति श्री
सहायक निदेशक (राजभाषा)



उपसंपादक

श्री सूरज कुमार
कनिष्ठ अनुवादक



विशेष सहयोग

श्री शशि रंजन
सचिव, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, चंद्रशेखरपुर भुवनेश्वर-751017
ई मेल : pdarlyecoastr@cag.gov.in
दूरभाष : 0674- 2301045

संरक्षक का संदेश



कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'धर्मपद' के तेरहवें अंक के सफल प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। पत्रिका का निरंतर प्रकाशन राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक सफल प्रयास है।

बहुसंस्कृति और बहुभाषा वाले हमारे देश में सबको एक साथ लेकर चलने में हिंदी की भूमिका अहम रही है। हिंदी हमारी विस्तृत भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम है। यही कारण है कि हिंदी को भारत की राजभाषा होने का सम्मान प्राप्त है।

वैश्वीकरण के इस युग में विश्व मंच पर भारत की भूमिका सशक्त होती जा रही है और इसी के साथ-साथ हिंदी विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। आज हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम भी राजभाषा हिंदी की इस विकास यात्रा के भागीदार बनें। इस दिशा में पत्रिका का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कदम है। पत्रिका कार्मिकों की कल्पनाशीलता, रचनात्मकता एवं अभिव्यक्ति को एक मंच प्रदान करती है और इस हेतु प्रयोग होने वाली भाषा जनमानस में स्वतः स्वीकार्य होती चली जाती है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल होगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल को बधाई और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(अनूप फ्रांसिस डुंगडुंग)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

संपादकीय



हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका ‘धर्मपद’ का 13वाँ अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हिन्दीतर क्षेत्र में स्थित ओडिशा के कार्यालय से वार्षिक हिन्दी पत्रिका “धर्मपद” के इस अंक को यात्रा विशेषांक के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर हमने न केवल राजभाषा के विकास में सम्मिलित होने, अपितु ओडिशा की संस्कृति से भी परिचित कराने की चेष्टा की है।

भाषा के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि भाषा संस्कृति और संस्कारों की अभिव्यक्ति है, भावना और विचारों की प्रस्तुति है। इसके अलावा यह हमारी प्राचीन सभ्यता के अर्जित ज्ञान एवं अनुभवों के संचय का माध्यम है। आधुनिक भारत में राजभाषा का दर्जा प्राप्त हिंदी पूरे देश का प्रतिनिधित्व करती है। हिन्दी में प्रकाशित पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार का संदेश लिए बृहत्तर क्षेत्र तक सहजता से पहुँचती है। “धर्मपद” के माध्यम से हमारा निरन्तर प्रयास है कि राजभाषा हिन्दी का उत्तरोत्तर विकास होता रहे।

पत्रिका के इस अंक को हमने यात्रा विशेषांक के रूप में आकार देने का प्रयास किया है। यात्रा के दौरान प्रकृति के विविध तथा विराट रूपों के साक्षात्कार के साथ अहं की तुच्छता का आभास होता है। यात्रा से अर्जित अनुभव जीवन को वृहद रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करते हैं। अलग-अलग स्थानों, जन-जीवन, संस्कृति से परिचय हमारे विचारों को विस्तार देते हैं। हम अपने ही नहीं, बल्कि दूसरों के अनुभवों से भी सीखते हैं। आशा है कि हमारा यह प्रयोग आप सभी को पसंद आएगा।

मैं पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी कार्मिकों को हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ, जिनके सहयोग एवं मार्गदर्शन से ‘धर्मपद’ पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका है। पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी आप सभी के सहयोग की अभिलाषी हूँ।

सधन्यवाद,

(कीर्ति श्री)

सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र. स.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1	ओडिशा के कुछ प्रमुख पर्यटन स्थल	श्री विभास चन्द्र, स.लेप.अ.	1
2	बनारस, अयोध्या, हरिद्वार और ऋषिकेश भ्रमण	श्री दीपक कु. दास , वरि.लेप. अ.	3
3	अराकु यात्रा	श्री चंदन कुमार, स.लेप.अ.	5
4	माँ वैष्णो देवी सह कश्मीर यात्रा वृतांत	श्री मनीष कुमार, स.लेप.अ.	7
5	आजादी का पहला अनुभव - भोपाल में	सुश्री प्रेरणा किशोर	11
6	चलो चलें केरल	श्रीमती नीतु चंद्रा	13
7	पंच लिंगेश्वर	श्रीमती रोमा कुमारी	16
8	पार्श्वनाथ पर्वत की मेरी यात्रा	श्री सतेन्द्र कुमार राम, स.लेप.अ.	18
9	कश्मीर - धरती का स्वर्ग	श्री शरत चंद्र महाराणा, वरि. लेप.अ.	19
10	जीवन अनुभव	सुश्री श्रेया तिवारी, लिपिक	20
11	मैंने भी देखा है चिलिका झील	श्री बिक्रम मिश्र, वरि.ले.प.अ.	21
12	आत्म प्रेम	श्री गोबिंद दीप, वरि.ले.प.अ.	24
13	हरिशंकर	श्री पी. के. मेहर, वरि.ले.प.अ.	25
14	त्योहार ओडिशा के	श्री द्विती कृष्ण दाश, स.लेप.अ.	26
15	हिंदी भाषा	सुश्री अनुष्का चौबे	29
16	विविधता से परिपूर्ण ओडिशा	सुश्री स्वागतिका साहू	30
17	सिटी ऑफ़ जॉय	सुश्री श्रद्धा राउत	32
18	चाँद तारे गवाह आज भी	श्री नवीन कुमार चौबे, स.लेप.अ.	33
19	कश्मीर यात्रा	सुश्री सागरिका साहू	34
20	राजस्थान: शाहीपन की प्रतिध्वनि	श्री बी. रामचंद्र राव, व. ले.प.	36
21	ओडिशा- संस्कृति एवं कला का अनूठा संगम	श्री आयुष्मान पंडा	37
22	पत्नी	श्री बिक्रम महापात्र, व. लेखापरीक्षक	38
23	आज कल के बच्चे	श्रीमती बिजयलक्ष्मी तांती	40
24	अरडी में बाबा अखंडलमणि मंदिर	श्री रामचंद्र बेहेरा, स.लेप.अ.	41
25	मेरी जगन्नाथ पुरी की यात्रा	श्री मिंटू हालदार, लेखापरीक्षक	44
26	भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान	श्री लोकनाथ सुतार, स.लेप.अ.	45
27	कंटीलो और नीलमाधव की कहानी	सुश्री अन्नपूर्णा नायक	46
28	चर्चिका मंदिर की कहानी	श्री शुभम नायक	46
29	अंडमान यात्रा	श्री सूरज कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	47

हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी की कुछ झलकियाँ





ओडिशा के कुछ प्रमुख पर्यटन स्थल

श्री विभाष चंद्र

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

खोरदा रोड मंडल

ओडिशा भारत के पूर्वी-दक्षिणी छोर पर बसा हुआ एक तटीय और खूबसूरत राज्य है। यहां तो वैसे कई जगहें हैं, जो बहुत खूबसूरत हैं लेकिन मैं सबसे पहले बात करूंगा ओडिशा के पहाड़ी जिले कोरापुट की, जो बेहद खूबसूरत है। बरसात के दिनों में तो इसकी खूबसूरती चौगुनी हो जाती है और यह स्वर्ग से कम नहीं जान पड़ता। पहाड़, झरने, तालाब, ऊंचे-ऊंचे पेड़ सब खानगी पर होते हैं। आइए उनके बारे में जानते हैं :

1. देवमाली :

देवमाली ओडिशा की सबसे ऊंची चोटी है। यह बेहद खूबसूरत है और गर्मी के दिनों में भी यहां का तापमान कम रहता है। बरसात के दिनों में देवमाली के हसीन पहाड़ बादलों से ढँक जाते हैं और उड़ते-घुमड़ते बादल इस जगह को और खूबसूरत बना देते हैं। सर्दियों में भी यहां घूमना अच्छा है। ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से ट्रेन या सड़क से कोरापुट पहुंचा जा सकता है। फिर कोरापुट से देवमाली पहुंचा जा सकता है।

2. दूदूमा वॉटरफॉल :

दूदूमा वॉटरफॉल कोरापुट के साथ-साथ पूरे ओडिशा में चर्चित है। दूदूमा वॉटरफॉल की ऊंचाई तकरीबन 500 फीट से अधिक है। यहां आसपास पेड़-पौधे भी बहुत हैं। वॉटरफॉल देखने के लिए 1000 से भी ज्यादा सीढ़ियां नीचे उतरना पड़ता है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता देखने लायक है।

3. ट्राइबल म्यूजियम :

कोरापुट का ट्राइबल म्यूजियम काफी प्रसिद्ध है। कोरापुट जिला आदिवासी लोगों और कॉफी के लिए जाना जाता है। यहां के ट्राइबल म्यूजियम में इसकी झलक देखने को मिल जाएगी।

4. चिलिका झील :

अब पहाड़ से निकलकर झील देखने चलते हैं और बात करते हैं विश्व प्रसिद्ध अर्ध-खारे जल की झील चिलिका झील की, जो पुरी, खुर्दा और गंजम जिलों में स्थित है। यह एक लगून है। इसका क्षेत्रफल 1100 वर्ग किलोमीटर है। यह भारत की सबसे बड़ी तटीय लगून है और विश्व की दूसरी सबसे बड़ी। दिसंबर से जून तक इसका पानी खारा होता है लेकिन बरसात में इसका पानी मीठा हो जाता है। इस झील के पारिस्थितिक तंत्र में बेहद जैव विविधताएं हैं। जाड़े के दिनों में यहां कैस्पियन सागर, बैकाल झील, अरब सागर, रूस, मंगोलिया, लद्दाख

और मध्य एशिया से पक्षी यहां आते हैं। ये पक्षी 1200 किलोमीटर से भी ज्यादा दूरियां तय करके चिलिका झील पहुंचते हैं।

1981 ईस्वी में रामसर घोषणा पत्र के अनुसार चिल्का झील को अंतरराष्ट्रीय महत्व की आर्द्र भूमि के रूप में चुना गया। यह इस महत्व वाली भारत की पहली झील थी। चिलिका पक्षियों, डॉल्फिनों, सरीसृप और उभयचरों का निवास स्थान है। यहां मछलियाँ भी काफी हैं। कुल मिलाकर यह पारिस्थितिकी का जीवंत उदाहरण है। चिलिका भुवनेश्वर से सड़क या ट्रेन से जाया जा सकता है। यह भुवनेश्वर से तकरीबन 100 किलोमीटर दूर है, अतः डेढ़ घंटे में यहां पहुंचा जा सकता है।

5. सतकोशिया टाइगर रिजर्व :

अब बात करते हैं सतकोशिया टाइगर रिजर्व की। यह ओडिशा के अंगुल और नयागढ़ जिले की सीमा पर स्थित है। इसका क्षेत्रफल 980.30 वर्ग किलोमीटर है। सतकोशिया वन्य जीव अभ्यारण 1976 में बनाया गया था। इसको टाइगर रिजर्व 2007 में नामित किया गया। यह जहां स्थित है वहां महानदी पूर्वी घाट पर्वतों में 22 किलोमीटर लंबी घाटी से होकर गुजरती है। यहां तेंदुआ, जंगली सूअर, जंगली बिल्ली, मगरमच्छ, घड़ियाल आदि पाए जाते हैं। कुल मिलाकर यह बेहद खूबसूरत है। पहाड़ों के बीच से गुजरती नदी और उसमें नौका-विहार का मजा दिलकश है।

6. भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान :

भीतरकनिका उत्तर पूर्व केंद्रपाड़ा जिले में स्थित 145 वर्ग किलोमीटर का राष्ट्रीय उद्यान है। इसे 16 सितंबर 1998 को राष्ट्रीय उद्यान नामित किया गया था। यह राष्ट्रीय उद्यान ब्राह्मणी, बैतरणी, धमारा और पाठशाला नदियों से घिरा हुआ है। यहां कई मैंग्रोव प्रजातियां हैं। यह उद्यान खारे पानी के मगरमच्छ, भारतीय अजगर, किंग कोबरा, ब्लैक आईबिल वनस्पतियों और कई जीवों का घर है। ओडिशा का भीतरकनिका भारत का दूसरा सबसे बड़ा मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र है। यहां सेंट्रल एशिया और यूरोप से जाड़े के समय पक्षियाँ आती हैं। विशाल नमक पानी मगरमच्छ के लिए यह जगह प्रसिद्ध है। यहां मगरमच्छों की लंबाई 23 फीट तक भी होती है। अन्य वन्य जीवन की विविधता इस पारिस्थितिकी तंत्र को एशिया का सबसे शानदार वन्य जीव क्षेत्र होने की प्रतिष्ठा प्रदान करता है। भीतरकनिका का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व समृद्ध है। यहां पर हिंदू मंदिर भी हैं जो मध्यकाल के हैं। यह भुवनेश्वर से करीब 5 घंटे की दूरी पर है।





बनारस, अयोध्या, हरिद्वार और ऋषिकेश का भ्रमण

श्री दीपक कुमार दास

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जब स्कूलों में गर्मी की छुट्टी प्रारंभ होती है और बच्चों के स्कूल बंद हो जाते हैं तो मन में एक लालसा जागती है कि क्यों ना रोजमर्रा के जीवन से हटकर कुछ अलग किया जाए और कहीं भ्रमण किया जाए। इसी अवसर का फायदा उठाकर इस बार मन में हुआ कि किसी धार्मिक स्थल का भ्रमण किया जाए। इसलिए इस बार जून 2024 को अपने परिवार के साथ बनारस, अयोध्या, हरिद्वार और योग नगरी ऋषिकेश का भ्रमण करने के लिए निकल पड़ा। दिनांक 14 जून 2024 को रेलवे से सफर करते हुए दिनांक 15.06.2024 को काशी नगरी बनारस पहुंचा। गर्मी इतनी थी कि मानो सूर्य देवता आग उगल रहे हों। फिर भी मन में काशी विश्वनाथ मंदिर देखने की लालसा और बाबा भोलेनाथ के दर्शन करने की इच्छा के सामने गर्मी का कुछ एहसास ही नहीं हुआ। दिनांक 16.06.2024 को सुबह 4:00 बजे नहा-धोकर भोलेनाथ के दर्शन की लालसा लिए निकल पड़े। तीन घंटे लाइन में इंतजार करने के बाद भोलेनाथ के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भोलेनाथ के दर्शन पाकर मन तृप्त हो गया। फिर शाम को विश्व प्रसिद्ध गंगा आरती की अद्भुत छठा का आनंद लेने के लिए गंगा घाट पर एकत्रित हुआ। सर्वप्रथम स्टीमर बोट में चढ़कर गंगा के किनारे बने हुए छप्पन घाटों का भ्रमण किया। फिर आरती देखने हेतु एक जगह गंगा घाट के बीचों-बीच स्टीमर खड़ा कर दिया गया। उस समय भी गर्मी इतनी थी कि सहा नहीं जाता था, फिर भी मन में गंगा आरती देखने की इच्छा के सामने मानो कोई परवाह नहीं हो रही थी। लगभग शाम 7:30 बजे गंगा आरती प्रारंभ हुई। ऐसा लगने लगा जैसे स्वर्ग में दीप प्रज्वलित हो रहा है। गंगा आरती की मनोरम छठा को देखकर मंत्र मुग्ध हो गया।

उसके बाद वहां एक रात बिताकर सुबह को रामनगरी अयोध्या के लिए निकल पड़ा। बनारस स्टेशन से वंदे भारत ट्रेन से तीन घंटे का सफर तय करके दिन के लगभग 12:30 अयोध्या पहुंचा। फिर एक होटल में थोड़ा विश्राम कर शाम को 5:00 बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के दर्शन करने गया। कहा जाता है कि हनुमान जी का दर्शन किए बिना राम जी का दर्शन अधूरा माना जाता है। इसलिए सर्वप्रथम हनुमानगढ़ी में जाकर हनुमान जी के दर्शन किए फिर श्री राम जी का दर्शन करने गया। वहां पाया कि सरकार द्वारा श्री राम के दर्शन करने के लिए उत्तम व्यवस्था की गयी है। चाहे सामान रखने की व्यवस्था हो या जूते-चप्पल रखने की व्यवस्था हो या लाइन में खड़े होकर भगवान राम के दर्शन करना हो, सभी की उत्तम व्यवस्था थी। भगवान राम का बाल रूप देखकर ऐसा लगा जैसे भगवान राम अभी-अभी माता कौशल्या की गोद से उतरकर वहां खड़े हुए हैं और हम सभी दर्शन अभिलाषियों को निहार रहे हैं। मन प्रसन्न हो गया। दूसरे दिन सुबह-सुबह सरयू नदी में स्नान करने चला गया। वहां सरयू नदी के किनारे वह

घाट है जहां दीवाली में करोड़ दिये एक साथ जलाए जाते हैं।

फिर उसी दिन शाम को ट्रेन पकड़कर दूसरे दिन हरिद्वार पहुंचा। हरिद्वार में गंगा जी में स्नान करने की बहुत लालसा थी। इसलिए सर्वप्रथम थोड़ा आराम कर गंगा जी के दर्शन करने गया। वहां गंगा जी का रूप देखकर मन मोहित हो गया। कितना स्वच्छ जल पहाड़ों से उतरकर कल-कल करते हुए बह रहा था। पानी इतना ठंडा था कि मानो अभी-अभी बर्फ से पिघल कर धारा निकल आई हो। मन भर कर पूरे परिवार ने गंगा जी में डुबकी लगाई। फिर शाम को वहां भी हरकी पौड़ी में गंगा जी की आरती का आनंद उठाया। यहाँ भी गंगा जी की आरती की छठा अब्दुत पाया।



फिर दूसरे दिन मां चंडी के दर्शन करने के लिए एक पहाड़ के ऊपर रोपवे से गया। रोपवे से पहाड़ के ऊपर जाना और फिर से रोपवे द्वारा पहाड़ से नीचे उतरना एक रोमांचक अनुभव है। ऊपर से देखने से लगता है कि कैसे गंगा की गोद में हरिद्वार शहर बसा हुआ है और गंगा के चारों ओर हरा-भरा मनोरम दृश्य.. जैसे लगता है स्वर्ग शायद यही है। उसी दिन शाम को पुनः गंगा जी का दर्शन करने निकला। वहां गंगा जी में पैर डालकर बैठने से अलग सुकून मिलता है। जब रात को गंगा के किनारे बने बड़े-बड़े होटलों की रोशनी गंगा नदी पर पड़ती है तो गंगा का पानी मोतियों की तरह चमकता है।

फिर उस दिन रात बिताकर सुबह योग नगरी ऋषिकेश के लिए निकल पड़ा। वहां भी प्रसिद्ध राम झूला, लक्ष्मण झूला में सैर करने का आनंद उठाया। फिर हमलोगों ने दो स्कूटी भाड़े पर लिया और पूरे ऋषिकेश का भ्रमण किया। ऋषिकेश राम झूला से लगभग 25 किलोमीटर दूर स्काई डाइविंग करने गया। वहां पर स्काई डाइविंग और स्काई साइकिलिंग का आनंद उठाया। पहले तो बहुत डर लगा, फिर बाद में बहुत आनंद आया। वहां भी शाम को गंगा आरती का साक्षी बना। सही में ऋषि-मुनियों का शहर है ऋषिकेश... जहां देखो ऋषि मुनि भ्रमण करते हुए मिलेंगे। फिर रात 9:00 बजे ट्रेन पकड़ कर पुनः हरिद्वार आया और वहां रात बिताकर दिल्ली के लिए रवाना हो गया। दिल्ली में एक रात रहकर लाल किला, इंडिया गेट आदि का भ्रमण किया और शाम को 8:00 बजे फ्लाइट पकड़कर रात 11:00 बजे तक भुवनेश्वर पहुंच गया। बहुत अच्छा अनुभव रहा। यह था मेरा गर्मी की छुट्टियों का सही उपयोग।



अराकु यात्रा

श्री चंदन कुमार

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

जब मैं पहली बार जॉब में आया था तभी से अराकु जाने का विचार मेरे मन में था लेकिन कभी ठीक से प्लान नहीं बन पाने के कारण जा पाना संभव नहीं हो पा रहा था। अचानक एक दिन टाटानगर से मेरे दोस्त अमित का कॉल आया और बातों ही बातों में हमदोनों ने अराकु जाने का प्लान कर डाला। फिर क्या था, हमने अपने तीसरे दोस्त कुणाल को कॉल किया जो बोकारो में जॉब करता था। पहले तो उसने मना कर दिया फिर वह भी मान गया। यह सफर हमलोगों के लिए बहुत यादगार होने वाला था क्योंकि हमलोग स्कूल के दोस्त थे, 12वीं के बाद हम लोगों की बात सिर्फ फोन पर ही हो पाई थी और अभी तो उन दोनों की शादी भी हो चुकी थी, बस मैं ही कुंवारा बचा था और मेरी भी शादी तीन-चार महीने में होने ही वाली थी। प्लान बना तो तीनों ने छुट्टी ली और तत्काल में भुवनेश्वर से विशाखापट्टनम का टिकट मेरे दोस्त ने ऑनलाइन बुक किया। मेरे दोनों दोस्त पहले भुवनेश्वर मेरे पास आ गए फिर हम तीनों ने रात को कोरोमंडल एक्सप्रेस पकड़ा जो भुवनेश्वर से करीब रात 10:00 बजे खुली। कितने सालों बाद मिलने के कारण यह सफर और भी सुहाना हो गया था। बातें करते-करते हम तीनों अपने स्कूल के दिनों में पहुंच गए और इसी बीच न जाने कब 12:00 बज गए पता ही नहीं चला। हमारी आवाज से बगल के यात्रियों को सोने में काफी मुश्किल हो रही थी, जिसके कारण हमलोगों ने मजबूरी में लाइट ऑफ किया और सोने की कोशिश करने लगे। वैसे तो इससे पहले भी हमने बहुत सारी यात्राएँ की थीं और मुझे तुरंत नींद भी आ जाती थी लेकिन दोस्तों के साथ होने के उत्साह के कारण मेरी नींद ही गायब हो गई थी। देखते ही देखते सुबह हो गई और हम विशाखापट्टनम पहुंच चुके थे। अचानक प्लान बनाने के कारण हम तीनों को ज्यादा आईडिया नहीं था कि अराकु कैसे जाना है। फिर हम लोगों ने विशाखापट्टनम से अराकु बस से जाने का फैसला किया हमने तीन टिकट लिए और बस पर सवार हो गए। बस पहाड़ी रास्तों पर चलने लगी तो हम तीनों का अराकु जाने का उत्साह और भी बढ़ने लगा। पहाड़, जंगल, और नदी के किनारे बसे गाँवों का दृश्य भी बहुत ज्यादा मनमोहक था।

अराकु घाटी पहुँचते ही हमने देखा कि यह जगह वास्तव में स्वर्ग से कम नहीं है। हरियाली और शांत वातावरण ने हमारे मन को मंत्रमुग्ध कर दिया। हमने अपने होटल में चेक-इन किया और आराम करने के बाद अराकु घाटी की सैर पर निकल गये।

अराकु घाटी में हमने कई प्रमुख स्थलों की यात्रा की, जिनमें बोर्ला गुफाएं और कत्यकी वॉटरफॉल हमें सबसे ज्यादा अच्छे लगे। बोर्ला गुफाओं की अद्भुत संरचना और इतिहास ने हमें बहुत प्रभावित किया। कत्यकी वॉटरफॉल की ठंडी पानी की धाराओं में हमने खूब मस्ती की।

अराकु की यात्रा के दौरान हमने वहाँ के स्थानीय भोजन का आनंद लिया। बंबू चिकन और झींगा करी का स्वाद हमलोग आज तक नहीं भुला पाए हैं। वहाँ के लोग बहुत ही मिलनसार और दोस्ताना थे। उनके साथ बातचीत करके हमें अराकु की संस्कृति और परंपराओं के बारे में जानने का अवसर मिला।

तीन दिन अराकु घाटी में बिताने के बाद हमारी वापसी की यात्रा का समय आ गया। बस से वापस विशाखापत्तनम और फिर वहाँ से ट्रेन द्वारा भुवनेश्वर लौटना था। वापस जाते समय हमारे मन में अराकु की खूबसूरत यादें और अनुभव ताज़ा थे। विशाखापत्तनम रेलवे स्टेशन पहुँचकर हमने अपनी ट्रेन पकड़ी और भुवनेश्वर वापस आ गये।

भुवनेश्वर से अराकु की इस यात्रा ने हमें न केवल प्रकृति की अद्वितीय सुंदरता का अनुभव कराया, बल्कि हमें यह भी सिखाया कि यात्रा के दौरान मिलने वाले अनुभव और यादें हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। यह यात्रा हमारे जीवन के सबसे खास पलों में से एक बन गई। अराकु की हरियाली, शांत वातावरण और वहाँ के लोगों की सरलता ने हमें बहुत प्रभावित किया। इस यात्रा ने हमें यह सिखाया कि जीवन में नई जगहों की खोज और नए अनुभवों का महत्व कितना होता है।

अंत में, भुवनेश्वर से अराकु की इस यात्रा ने हमारे मन में एक अजीब सी शांति और संतोष का अनुभव कराया। इस यात्रा ने हमें यह एहसास कराया कि प्रकृति के बीच कुछ समय बिताना हमारे जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण और सुखद हो सकता है।

**_*_

चित्रकला



सुश्री आद्याशा पात्र, कक्षा : 10, सुपुत्री : श्रीमती दिप्ति मयी साहु, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी



माँ वैष्णो देवी सह कश्मीर यात्रा वृतांत

श्री मनीष कुमार

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

वाल्टेयर मंडल

हमने अपने परिवार के साथ अगस्त-2024 में माता वैष्णो देवी धाम और कश्मीर जाने का प्लान बनाया। मैंने अपनी यात्रा की शुरुआत पटना से की। इस यात्रा का उद्देश्य न सिर्फ आध्यात्मिक शांति और सुकून प्राप्त करना था, बल्कि “धरती का स्वर्ग” कहे जाने वाले कश्मीर की ऐतिहासिक और प्राकृतिक सुंदरता को भी महसूस करना था। यह यात्रा विशेष थी क्योंकि मैं सबसे पहले करीब 5200 फीट ऊँचे पहाड़ों पर विराजमान माता वैष्णो देवी के दर्शन के लिए जा रहा था और उसके बाद खूबसूरत वादियों वाले कश्मीर की सुंदरता को महसूस करने के लिए तैयार था।

पटना से कटरा (वैष्णो देवी) :

हमारी ट्रेन जैसे ही जम्मूतवी रेलवे स्टेशन पहुँचने को हुई कि सबके मोबाइल के नेटवर्क अवरुद्ध हो गए पर मेरे मोबाइल का नेटवर्क काम कर रहा था। हमें लगा कि शायद ट्रेन में होने के कारण नेटवर्क नहीं है। हमारी ट्रेन अपने गंतव्य स्थल जम्मूतवी स्टेशन पर पहुँच गयी। जम्मू रेलवे स्टेशन के बाहर निकलते ही सिमकार्ड बेचने वालों की भीड़ खड़ी दिखी। पूछने पर पता चला कि यहाँ बाहरी प्रीपेड मोबाइल नेटवर्क काम करना बंद कर देते हैं, तब समझ में आया कि मेरे मोबाइल का नेटवर्क इसलिए काम कर रहा था क्योंकि वो पोस्टपेड सिमकार्ड था। जिनके मोबाइल नेटवर्क काम करना बंद कर चुके थे उन सबने वहाँ से आगे के सफ़र के लिए एक-एक सिमकार्ड खरीद लिए। चूँकि हमारी ट्रेन पटना से जम्मू तक की ही थी, अतः जम्मू से आगे कटरा तक का सफ़र हमने सड़क मार्ग से करने का निर्णय लिया। कटरा पहुँचते ही बहुत से लोग होटल के लिए पूछने लगे। हमलोग पटना से कटरा तक की यात्रा करने के बाद थोड़ा थक गए थे, अतः हमने होटल ढूँढने में वक़्त बर्बाद करना उचित न जानकार उन्हीं लोगों की मदद से एक होटल ले लिया। होटल में हमसब तैयार होकर संध्या करीब चार बजे माता वैष्णो देवी के दर्शन हेतु पहाड़ों की चढ़ाई के लिए निकल गए। हमने सबसे पहले यात्रा पंजीकरण काउंटर पर जाकर अपना यात्रा आईडी बनवाया। इस आईडी के बिना बाण गंगा चेक पोस्ट को पार करने की अनुमति नहीं है। यह यात्रा पंजीकरण बिलकुल मुफ्त है, जिसे आप श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड की आधिकारिक वेबसाइट (maavaishnodevi.org) पर जाकर भी बनवा सकते हैं। तत्पश्चात हम सब यात्रा पूर्व बाण गंगा चेक पोस्ट पर अपनी आईडी जांच करवाने हेतु लगे लम्बी कतार में कतारबद्ध खड़े हो गए। यहीं से करीब 5200 फीट की ऊँचाई पर विराजमान माता का मंदिर दिख रहा था, जिसे देखते ही पूरा बदन रोमांच से भर गया। हमने माता का जयकारा लगाते हुए करीब सायं 6:00 बजे पहाड़ों की चढ़ाई शुरू कर दी।

कटरा से पैदल माता का दरबार करीब 12 किलोमीटर दूरी पर है, जहाँ जाने के लिए हेलीकॉप्टर, पालकी एवं घोड़े जैसी अन्य बहुत सी सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जिन्हें आप एक निर्धारित शुल्क देकर बुक कर सकते हैं। हमलोग यहाँ पहली बार आये थे अतः हमने पैदल ही माता के दरबार जाने का निर्णय लिया। रास्ते में पहाड़ों की ऊँचाई और शांति का स्पष्ट अनुभव हो रहा था। यह रास्ता छोटी-बड़ी दुकानों से सजा हुआ था, जहाँ से स्नैक्स और पानी लेते हुए हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। हमारे बगल से कुछ लोग घोड़ों पर तो कुछ पालकी में बैठकर निकल रहे थे। इनमें जाने वाले अधिकांशतः वैसे लोग थे जो यह रास्ता पैदल चलकर जाने में असमर्थ थे। जो बच्चे अभी गोद में हैं या बहुत छोटे हैं, उनके लिए भी शुल्क के आधार पर स्ट्रालर की व्यवस्था थी। सभी लोग माता वैष्णो देवी का जयकारा लगाते हुए पूरे जोश और उमंग के साथ आगे बढ़ रहे थे तो उनमें से कुछ माता की भक्ति में मग्न होकर नृत्य करते हुए जा रहे थे। रास्ते में कई तरह के भक्तों से मुलाकात हुई, जो विभिन्न राज्यों और देशों से आए थे। रात के करीब 10:00 बजे हमलोग अर्धकुंवारी पहुंचे। अधिकांश लोग यहाँ कुछ घंटे आराम करने के बाद आगे की चढ़ाई शुरू करते हैं पर हमलोगों ने निरंतर चलकर सीधे माँ के दरबार पहुँचने का मन बना लिया था। अतः हमने वहाँ कुछ देर आराम करके आगे की चढ़ाई शुरू कर दी। हमलोग अब मंदिर के करीब आ गए थे, जहाँ से नीचे देखने पर छोटे-छोटे बादल नीचे तैरते हुए साफ़ दिखाई दे रहे थे। साथ ही रात में रोशनी से जगमगाते हुए पूरे शहर का दृश्य भी काफी मनोरम और खूबसूरत दिखाई दे रहा था। हम ये सारा दृश्य कैमरे में कैद कर आगे बढ़ गए। कुछ दूर आगे जाने पर हमलोगों को त्रिकुटा पहाड़ी पर विराजमान माता के दरबार का पहला दर्शन प्राप्त हुआ जिसकी खूबसूरती और इतनी ऊँचाई पर इतने सुनियोजित ढंग से बनाए गए मंदिर को देखते ही पूरे शरीर में रोमांच उत्पन्न होना लाजमी थी। हमने यहीं से माता को अपना पहला प्रणाम अर्पित किया और पूरे जोश से सांचे दरबार वाली माता का जयघोष करते हुए मंदिर को बढ़ चले। रात्रि के करीब 1:00 बज रहे थे जब हम माता के दरबार में पहुँचे। यहाँ पहुँचते ही इतनी जोर से मूसलाधार बारिश शुरू हो गयी कि पहाड़ों की पूरी वादी बारिश की बूंदों की झमझमाहट से गूँज उठी। इसे देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो प्रातः काल में साक्षात इन्द्रदेव माता के दरबार को बारिश की बूंदों से निर्मल कर माँ के पैर पखारने आये हों। हमसब माँ के मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व स्नान करने के लिए स्नानघर की तरफ चले। यहाँ महिलाओं एवं पुरुषों के लिए अलग अलग सुविधाएँ मौजूद थीं। स्नानघर में नहाने के लिए कई कमरे थे और इन सबमें सिर्फ़ झरना लगा हुआ था जिससे पानी के बहुत ही तेज फव्वारे निकल रहे थे। सतह पर एड़ी तक पानी भरा हुआ था। मैंने नहाने की लिए जैसे ही पाँव अन्दर रखा पूरे शरीर में करंट-सा दौड़ गया। झरने का पानी इतना ठंडा था कि अगर कोई 2 मिनट तक भी झरने के नीचे खड़ा रहता तो उसका पूरा शरीर ठण्ड से अकड़ जाता। जल्दी से मैं झरने से बाहर निकलकर अपने गीले बदन को पोंछ लिया फिर भी पूरा बदन ठिठुर रहा था, लग रहा था जैसे बर्फ के नदी में डुबकी लगाकर निकला हूँ। पैर की अंगुलियाँ ठण्ड से बार-बार ऐंठ जा रही थीं। मुझे लगा ये क्या हो रहा है, मैंने जल्दी से अपने पैर के तलवे को रगड़ना शुरू कर दिया ताकि गर्माहट से शायद कुछ आराम हो आये। इतने ठण्डे पानी में स्नान करने का यह पहला अनुभव था। अब हम माता के दर्शन हेतु मंदिर में कतारबद्ध तरीके से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। हमलोग अब माता के मंदिर के प्रांगण में खड़े थे। यहाँ से एक प्रवेश द्वार था जो एक गुफा के अन्दर जाने का मार्ग था और इसी गुफा के अन्दर माता वैष्णो देवी विराजमान हैं। हमलोग माता के प्रांगण में खड़े होकर इस अमृत बेला में आस-पास बिखरी छटाओं को देख रहे थे। अहा! कितना ही मनोरम यह सारा दृश्य है। तभी मेरी नजर आसमान को चूमती एक पर्वत शिखर पर पड़ी जहाँ एक और मंदिर दिख रहा था। मैंने बड़े ही कौतुहलपूर्वक लोगों से पूछा कि हमलोग तो धरा से 5200 फीट की ऊँचाई पर माँ के मंदिर के प्रांगण में खड़े हैं तो अब वो कौन सा मंदिर है, जो गगन को छूता हुआ सा प्रतीत हो रहा है। लोगों ने बताया की वह बाबा भैरोनाथ का मंदिर है और माता के दर्शनोपरांत उनके दर्शन भी अनिवार्य

हैं, उनके दर्शन के बिना यह यात्रा अधूरी मानी जाती है। हम माता वैष्णो देवी की गुफा में पहुंचे और करीब 4:00 बजे सुबह हमें माता के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुफा का आंतरिक वातावरण बहुत पवित्र और शांति से परिपूर्ण था। माता के दर्शन से आध्यात्मिक सुख मिला और मन बहुत हल्का हुआ।

हमने वहां कुछ समय बिताया और फिर भैरोनाथ बाबा के दर्शन हेतु प्रस्थान करने का निर्णय किया। लगातार चढ़ाई से अब हमलोग थक चुके थे इसलिए हमने बाबा भैरोनाथ के मंदिर तक जाने के लिए घोड़ों को बुक कर लिया। कहीं-कहीं चढ़ाई का मार्ग काफी संकीर्ण था, जहाँ से घोड़े की सवारी एक तरफ रोमांच पैदा कर थी तो वहीं दूसरी तरफ नीचे गहरी- गहरी घाटियों को देखने से शरीर में सिहरन पैदा हो रही थी। हेलीपैड भी नीचे की घाटियों में ही बना था, जिसे आप भैरोनाथ बाबा के प्रांगण से स्पष्ट देख सकते हैं। हेलिकॉप्टर के उड़ान से भी उंचाई पर होने का ये अनुभव अद्भुत था। भैरोनाथ बाबा के दर्शनोपरांत हम घोड़ों से ही वहां की मनोरम और गहरी घाटियों का आनंद लेते हुए कटरा वापस लौटने के लिए निकल गए। यहाँ एक और चीज जिसने मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया वो था- हमारे घोड़ों के लगाम को थामे घोड़े के कदम से कदम मिलाकर चल रहा उसका मालिक! मैंने रास्ते में उनसे पूछा कि आप दिनभर में कितनी बार लोगों को इस पहाड़ पर लेकर आते-जाते हैं। उसने बड़ी सहजता से 5-6 बार बोल दिया। मैं मन ही मन सोचने लगा कि हम दोनों ही मनुष्य हैं लेकिन दोनों की जीवनशैली ने हमदोनों को एक-दूसरे से कितना अलग कर दिया है। जहाँ ये इन पहाड़ों पर बिना रुके कई बार बड़े ही आराम से आना-जाना कर लेता है, वहीं मेरी हालत पहाड़ों पर सिर्फ ऊपर चढ़ने में ही खस्ता हो गयी। धीरे-धीरे चलते हुए हम नीचे बाणगंगा चेक पोस्ट पर पहुँच गए। यहाँ टी-सीरीज के मालिक और उद्योगपति दिवंगत गुलशन कुमार का लंगर चलता है, जिसे इन्होंने साल 1983 में शुरू किया था। स्वर्गीय गुलशन कुमार के निधन के बाद भी उनके परिजन यह लंगर नियमित रूप से चला रहे हैं। यह लंगर पूर्णतः निशुल्क है। यहां श्रद्धालुओं को शुद्ध घी से बना भोजन परोसा जाता है। हमने यहाँ आकर प्रसाद ग्रहण किया और वापस कटरा के अपने होटल में लौट गए। यह यात्रा वास्तव में आध्यात्मिक और मानसिक शांति से भरपूर थी।

कटरा से श्रीनगर (कश्मीर) :

रात्रि विश्राम कर अगली सुबह हमलोग श्रीनगर के लिए रवाना हुए। कश्मीर भ्रमण का पैकेज हमारे होटल के तरफ से ही हमें मिल गया था, जिसमें रास्ते में आने वाले हिल स्टेशन पत्तिटोप और नत्थाटोप में एक रात का पड़ाव एवं कश्मीर में दो रात के पड़ाव के साथ ही कटरा वापस लाकर फिर नई दिल्ली रेलवे स्टेशन तक छोड़ने की सुविधा दी गयी थी। जम्मू से श्रीनगर की यात्रा सड़क मार्ग से बहुत सुंदर थी। संकरी घाटियों से होते हुए जब हमारी गाड़ी गुजर रही थी तब बाहर झाँकने से ऐसा प्रतीत होता था मानो हम इन गहरी घाटियों के ऊपर ही उड़कर जा रहे हों क्योंकि सड़क इतनी संकरी थी कि खिड़की से बाहर झाँकने पर सड़क न दिखकर सीधी गहरी-गहरी घाटियाँ दिख रही थीं। जैसे ही हम कश्मीर में प्रवेश करते हैं, वादियों का दृश्य आंखों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

श्रीनगर में सबसे पहले हम डल झील का भ्रमण करने के लिए पहुँचे। डल झील के भ्रमण के लिए यहाँ बड़े ही खूबसूरत अंदाज में सजाये हुए छोटे-बड़े कई शिकारे (नाव) उपलब्ध थे। शांति से भरी झील, शिकारे की सवारी और आसपास की खूबसूरत पहाड़ियाँ, यह सब एक जादुई अनुभव था। हम शिकारे पर बैठकर झील के पानी में तैरते हुए प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते रहे। डल झील में झील के बीचों-बीच बने बाज़ार में खरीदारी की जा सकती है। इस बाज़ार में दो सौ से ज़्यादा दुकानें और शोरूम हैं, जहाँ केसर, पश्मीना शॉल, पेपर माची उत्पाद, कालीन, चैन स्टिच गलीचे और यहाँ तक कि सोने के गहने भी मिलते हैं। यहां फेरीवाले भी मौजूद हैं, जो इस झील में आये हुए पर्यटकों के शिकारे के पास जा-जाकर अपना सामान बेचते हैं। डल झील के बाद हम श्रीनगर के

प्रसिद्ध मुगल बागों, जैसे निशात बाग और शालीमार बाग गए। इन बागों में बगीचों की सुंदरता देखते ही बनती है। यहाँ के फूलों की खुशबू और ठंडी हवा ने हमारी यात्रा को और भी खास बना दिया।

श्रीनगर से हम गुलमर्ग की ओर गए। गुलमर्ग की स्कीइंग गतिविधियाँ और एटीवी बाइक राईडिंग का अनुभव बेहद रोमांचक था। हमने यहाँ सेव के बगीचे देखे, जहाँ भिन्न-भिन्न किस्म के पके हुए सेव पेड़ों पर लदे हुए थे। बगीचे के मालिक ने हमलोगों को कई उन्नत किस्म के सेवों को चखने को दिया। यहाँ सेव की कीमत काफी ही कम थी। हम सबने वहाँ से कई प्रकार के सेव एवं ड्राय फ्रूट्स को खरीद कर वापस कश्मीर की ओर प्रस्थान किया। गुलमर्ग की खूबसूरत घाटी और प्राकृतिक सौंदर्य ने हमारी यात्रा को और भी यादगार बना गया।

लौटते वक़्त रास्ते में हम पुलवामा जिले से होते हुए लौट रहे थे। यहाँ आते ही 14 फरवरी 2019 को हुए पुलवामा हमले का स्मरण हो आया। यह हमला भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव के बीच एक महत्वपूर्ण और दुखद घटना बन गया। हमलावर ने सीआरपीएफ (Central Reserve Police Force) के काफिले पर आत्मघाती हमला किया, जिसमें 40 जवान शहीद हो गए और कई अन्य घायल हो गए थे। पुलवामा हमले के बाद कश्मीर घाटी में सुरक्षा व्यवस्था को और भी सख्त किया गया। इस हमले ने भारतीय सुरक्षा बलों को यह महसूस कराया कि आतंकवादियों के खिलाफ और अधिक कड़े कदम उठाने की आवश्यकता है। पुलवामा हमले के बाद कश्मीर में सुरक्षा उपायों में कई महत्वपूर्ण बदलाव और वृद्धि की गई। इन सुरक्षा उपायों का उद्देश्य आतंकवादियों की गतिविधियों को रोकना और आम नागरिकों की सुरक्षा को सुनिश्चित करना था। हालांकि, यह क्षेत्र अब भी संवेदनशील है और सुरक्षा की स्थिति में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

कश्मीर लौटकर हम वहाँ के बाजार घूमने निकल पड़े। रास्ते में ही लाल चौक मिला। यह कश्मीर का एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और वाणिज्यिक केंद्र है, जो कश्मीर की पहचान और राजनीतिक संघर्षों का प्रतीक बन चुका है। यहाँ पर कई बार विरोध प्रदर्शन, आंदोलनों और राजनीतिक घटनाएँ हुई हैं। विशेष रूप से, जब 1990 के दशक में कश्मीर में अलगाववाद और आतंकवाद की लहर तेज़ हुई थी, तब लाल चौक विभिन्न विरोध प्रदर्शन और राजनीतिक कार्रवाइयों का स्थल बना। लाल चौक के पास स्थित घड़ी टॉवर इस क्षेत्र का एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है। यह टॉवर ब्रिटिश काल का है और इसे कश्मीर के ऐतिहासिक स्थापत्य का हिस्सा माना जाता है। यह न केवल स्थानीय लोगों के लिए, बल्कि पर्यटकों और राजनीतिक नेताओं के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ की राजनीतिक स्थिति, सांस्कृतिक समृद्धि और ऐतिहासिक महत्त्व ने इसे कश्मीर घाटी के एक प्रमुख स्थल के रूप में स्थापित किया है।

कश्मीर में खाने-पीने का भी अनुभव अद्वितीय था। खासकर कश्मीरी राजमा-चावल, यखनी और कश्मीरी डोलमा बहुत स्वादिष्ट थे। कश्मीरी चाय (काहवा) पीने का भी एक अलग अनुभव था, जो इस यात्रा का हिस्सा बना। इसके अलावा, हम कश्मीर के कई स्थानीय बाजारों में गए, जहाँ कश्मीरी शॉल, कालीन और अन्य हस्तशिल्प का अवलोकन किया। यहाँ की कारीगरी और कला में एक अलग ही सौंदर्य था।

भक्ति, प्राकृतिक सौंदर्य, रोमांच और आतंकी गतिविधियों से उबरते कश्मीर की यह यात्रा मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव रहा। जहाँ वैष्णो देवी के दर्शन ने आध्यात्मिक शांति दी वहीं कश्मीर की वादियों और संस्कृति ने मेरी यात्रा को बहुत खास बना दिया। यह यात्रा न केवल मेरी आत्मा को ताजगी देने वाली रही बल्कि कश्मीर और हिमाचल की प्राकृतिक सुंदरता को भी मैं हमेशा याद रखूंगा।



आज़ादी का पहला अनुभव, भोपाल में

सुश्री प्रेरणा किशोर

सुपुत्री- श्री जय किशोर, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

बहुत उत्सुक थी मैं इस बार। आखिर पहली बार अकेले सफ़र करने का अवसर जो मिल गया था। मैं बात कर रही हूँ वर्ष 2023 की। मैं हो चुकी इक्कीस वर्ष की। पापा ने कैप आदि में किसी ज़िम्मेदार के भरोसे मुझे कई जगह जाने दिया लेकिन खुद की ज़िम्मेदारी खुद लेने देने से वे ज़रा कतराते थे। फिर भी अपनी ज़िद लिए मैंने उन्हें मना ही लिया अपनी एक सहेली के साथ भोपाल जाने देने के लिए। 28 मई 2023 को मैं और तपस्या निकल पड़े भोपाल घूमने। वैसे तो हम किसी काम से जा रहे थे, तो घूमने के लिए एक ही दिन हाथ में था। हमने ट्रेन पकड़ी जिसका नाम तो सुपरफ़ास्ट एक्सप्रेस था, लेकिन बेचारी पहुँची पूरे दस घंटे ग्यारह मिनट देरी से। बीते कुछ वर्षों में भारतीय रेल ने बहुत तरक्की की है, लेकिन ट्रेनों के समय पर न चलने की दशा कमोबेश आज भी वही है। इस तथ्य को भारत का कोई नागरिक नकार नहीं सकता।

बहरहाल, सफ़र की शुरुआत आधी रात को भुवनेश्वर से हुई। पापा स्टेशन छोड़ने आये थे, हम ट्रेन में बैठे और फिर देखते-देखते हमारी गाड़ी खुल गई। रोमांच का तो ठिकाना न था। हम दोनों ने अपनी-अपनी सीट सजाई, खाना खाया और बस सो गए। एक दिन का पूरा सफ़र करने के बाद ट्रेन को भोपाल अगले दिन ही आधी रात को पहुँचाना था लेकिन देर करते-करते हम अगली सुबह साढ़े दस बजे के करीब भोपाल जंक्शन पहुँचे। हर तरफ़ भीड़ थी। सामान चोरी होने का डर था इसलिए हम दोनों बहुत संभलकर चल रहे थे। स्टेशन से बाहर आने से पहले ही कई रिक्शावाले पीछे पड़े थे। हमने एक रिक्शावाले से बात पक्की की और पास में किसी अच्छे होटल में ठहरने को कहा। रिक्शावाले ने एक बड़े ही आलीशान होटल के पास लाकर छोड़ा। देखने में बहुत महंगा लग रहा था लेकिन मिला-जुला कर ठीक ही था। ए.सी., गीजर और अन्य सुविधाओं के साथ एक दिन का किराया था एक हजार। क्योंकि हम पहली बार गए थे अकेले, तो एक हजार हम कम ही समझ रहे थे। हमारे लिए शायद 800 या 900 रूपए एक दिन का ज़्यादा होता पर 1000 तो कम ही था। शून्य तो शून्य है, उसका भाव कहाँ। हमने हाँ कर दिया और दो दिन के लिए वहाँ बस गए।

जैसे ही कमरे में घुसे, ऐसा लगा मानो महल में आ गए हों। अच्छे से नहाकर हम घूमने निकल गए। पास ही में एक ऑटो-रिक्शावाले करीम चाचा मिल गए। उन्होंने दिन भर का भाड़ा आठ सौ रुपये बताया और हम दोनों बिना कोई मोल-भाव किए चढ़ गए। कहते हैं न कि जो कमाता नहीं, वही पैसे खर्च करते वक्त इज्जत-इज्जत का सोचकर ज़्यादा पैसे खर्च करता है, मोल-भाव करने में अपनी इज्जत को छोटा पाता है। अजीब विडम्बना है!

बहरहाल, हम बारह बजे के लगभग निकले तो चाचा पहले हमें खाने के लिए ले गए। छोटा-सा होटल था, लेकिन खाना लाजवाब था। आधी थाली नब्बे रूपए की थी और पूरी एक सौ दस की। दोनों में बस एक पनीर की सब्ज़ी का अंतर था। इसके अलावा सब समान था। चावल, दाल, रोटी, चने का सलाद, गुलाब जामुन, दहीबाड़ा,

मिक्स भेज, छोले की सब्जी, बैंगन का भुजिया और चिप्स थे। दोबारा और मांगा जा सकता था लेकिन इतना ही खाकर हम गले तक भर चुके थे। हमने उनके खाने की तारीफ़ की और फिर निकल पड़े ताज-उल-मस्जिद की ओर। इंटरनेट पर पहले से ही तस्वीर देख ली थी, उसी के हिसाब से फोटो खिंचवाने की तैयारी करके गई थी। आज के सोशल मीडिया के ज़माने में लोकेशन के अनुसार तैयार हो कर जाना ताकि अच्छे फोटोज़ आयें, यह कोई अचंभित कर देने वाली बात नहीं। यकीन मानिये, वहाँ पहुँचते ही उस जगह की खूबसूरती देखकर मेरी आँखें खुली की खुली रह गईं। लाल पत्थर से बने दीवार और सफ़ेद गुम्बद, बहुत हद तक बनावट ताजमहल की तरह थी पर फिर भी उससे बहुत अलग और खूबसूरत। इसमें चार गुम्बदनुमा मीनारें थीं जिनका इस्तेमाल मदरसे की तरह किया जा रहा था। यह भारत की सबसे बड़ी मस्जिद है और विश्व का नौवाँ सबसे बड़ा मस्जिद माना जाता है। इसके सामने हरे पानी से भरा एक कुंड जैसा था जो वहाँ की खूबसूरती में चार चाँद लगा रहा था। मैंने और तपस्या ने अलग-अलग फ़िल्मी पोज़ में फोटो खींचे।

फिर हम गुफ़ा मंदिर गए। सीढ़ियाँ इतनी चढ़नी थी कि आपको आपके फेंफड़ों के हाल का जायज़ा मिल जायेगा। लेकिन वहाँ पहुँचकर सुकून बहुत मिला। गुफ़ा, मंदिर और अनेक वृक्षों के छाँव तले प्रकृति का एक अनुपम सुख प्राप्त हुआ।

सूरज हमें ऊपर से एकदम एक सौ अस्सी डिग्री के कोण से देख रहा था और हमारे सब्र को जाँच रहा था। लेकिन हम भी जवान खून, उसे जवाब देते हुए पहुँच गए टेकरी। पहाड़ों की ऊँचाई से भोपाल का नज़ारा अब्दुत लग रहा था। कड़क धूप के होते हुए भी गर्मी नहीं लग रही थी। ऊँचाई पर अक्सर ऐसा होता है क्योंकि प्रदूषण व भीड़ के कम होने के कारण हवाएँ अबाधित रूप से तन को संतुष्ट करने में सक्षम होती हैं। उस पहाड़ से ज़रा पीछे गए तो एक जैन मंदिर भी मिला। उसके दीवारों की नक्काशी देखने लायक थी। एकदम महीन काम, मानो किसी ने जीवन भर अर्जित किए अपने कौशल को उसमें उड़ेल दिया हो। फोटो लेना मना था, लेकिन आँखों में उस दृश्य की तस्वीर आज भी जीवंत हैं।

फिर हम गए अपर लेक, जिसे ग्यारहवीं शताब्दी में राजा भोज द्वारा बनाया गया था। वहाँ हमने नौका विहार किया और फिर भोपाल के स्ट्रीट फूड का मज़ा लिया। 'बेस्ट आउट ऑफ़ वेस्ट' का सबसे अच्छा नमूना हमने वहाँ देखा। प्लास्टिक के बोतलों से और अन्य रद्दी के सामानों से वहाँ एक बड़ी सी वायलिन खड़ी की गई थी और एक पृथ्वी भी बनाई गई थी। वहीं पर सूर्यास्त के नज़ारे का आनंद हमने उठाया।

फिर घाटियों जैसे रास्तों से होते हुए हम भोपाल के सुन्दर-भव्य बिरला मंदिर भी गए। वहाँ की दीवारों पर भारतीय संस्कृति व परंपरा की अमिट छाप थी। वहाँ से अंततः हम भोपाल के बाज़ार गए। वहाँ की खासियत यह थी कि कपड़े और गहने बहुत सस्ते दामों में उपलब्ध थे। महिलाओं के लिए मुफ़्त सलाह देना चाहूँगी कि पूरा बाज़ार घूम लें, उसके बाद ही कपड़े खरीदें, वरना जो खरीदेंगी, उससे बेहतर कुछ और दिख जाएगा जिसके लिए आपके पास पैसे नहीं बचेंगे। खैर, मेरे साथ तो ऐसा ही हुआ था। मुँह लटकाकर वापस लौटना पड़ा।

हमने रात का खाना होटल में ही खाया। थककर चूर-चूर हुए हम बिस्तर पर लेटते ही सपनों की दुनिया की सैर करने लगे। अगले दिन अपना काम निपटाया और उसी ट्रेन से भुवनेश्वर के लिए निकल गए। इस बार कई वर्षों के बाद, न..न... कम से कम एक दशक बाद स्लीपर क्लास में मैं आई। यह मेरी इच्छा थी कि खिड़की के पास उस चाँद को निहारते हुए, हवा के झोंकों को अपने चेहरे से टकराते हुए महसूस करते हुए एक सफ़र तय करूँ। तो बस, फिर एक बार पापा-मम्मी की बात को काटते हुए हम स्लीपर क्लास में आए। आखिर एक ही ज़िन्दगी मिली है और इसी में सारे अनुभव लेने हैं। पापा-मम्मी की चिंता भी जायज़ है, लेकिन जिस तरह एकसीडेंट के डर से इंसान सड़क पर चलना नहीं छोड़ देता, हम भी जीवन में अनुभव लेना नहीं छोड़ सकते। बंधनों के चलते आज़ादी की आहुति नहीं दी जाती। सार यही है कि सफ़र, मंज़िल और अनुभव, तीनों बहुत खूबसूरत थे। मुझ पर भरोसा करने के लिए पापा-मम्मी का दिल की गहराइयों से शुक्रिया।



चलो चलें केरल

श्रीमती नीतु चंद्रा

पत्नी- श्री विभाष चंद्र, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी,
खोरदा रोड मंडल

यात्रा वृतांत साहित्य की एक ऐसी विधा है जिसमें लेखक अपनी यात्राओं का अनुभव रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है। यात्रा- वृतांत यात्री के अनुभव, सौंदर्य बोध और प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति है। यह पाठक को नई-नई जानकारी तो देता ही है, साथ ही लेखक के नए अनुभवों से उसे रोमांचित भी करता है। तो आइए इस यात्रा वृतांत के साथ आज मैं भी एक यात्रा के अनुभव को आपके साथ अभिव्यक्त करती हूँ। वैसे तो मैंने आज तक कई यात्राएं की हैं पर केरल की यात्रा मेरे लिए अविस्मरणीय है।

बच्चों की अर्धवार्षिक परीक्षा के बाद हमने दुर्गापूजा छुट्टी में घूमने की योजना बनाई। बच्चों की परीक्षा के बाद छुट्टियों में मजा तो आता ही है और कुछ जानकारी भी हो जाती है। इस बार हम चार परिवारों की घूमने की योजना हुई। लेकिन कहाँ घूमने चलें, ये तय नहीं हो पा रहा था। फिर सभी लोगों ने तय किया कि हमलोग केरल (ईश्वर का अपना देश) चलेंगे। उसके बाद क्या था, धड़ाधड़ टिकट, होटल बुकिंग, हाउस बोट बुकिंग की योजना होने लगी। सबकुछ पहले से ही बुक कर लिया गया था। आखिर में एक लंबे इंतजार के बाद वो दिन आ गया, यानि 2 अक्टूबर जिस दिन सुबह 8.54 में हमारी ट्रेन (विवेक सुपरफास्ट एक्सप्रेस) थी, भुवनेश्वर से कन्याकुमारी। हम चार परिवार पवन भैया, नवीन भैया, अविनाश भैया और हमारा परिवार सभी सुबह 7 बजे भुवनेश्वर स्टेशन के लिए निकल पड़े। स्टेशन पहुंचने पर हमारी ट्रेन एक घंटा देर से आई और फिर इन्तजार हँसी-मजाक के बीच हम विवेक एक्सप्रेस में सवार हो गए। हम कुल सोलह लोग थे। भुवनेश्वर से कन्याकुमारी कुल 42 घंटे ट्रेन में कैसे कटे हमें पता भी नहीं चला। हम खाते-पीते, सोते, हँसते- खेलते, गप्पें करते आखिर कन्याकुमारी 4 अक्टूबर को रात एक बजे पहुंचे। वहाँ हमने रेस्ट हाउस बुक किया था, जहाँ हमने रात में विश्राम किया। अगले दिन विवेकानंद रॉक मेमोरियल और भगवती अम्मन मंदिर के दर्शन के लिए हम सब सुबह 9 बजे तक नाश्ता करके तैयार हो गए। माता शक्ति के कुमारी रूप की याद में ही इस स्थान का नाम कन्याकुमारी पड़ा था। कन्याकुमारी एक खाड़ी, एक सागर और एक महासागर का मिलन बिंदु है। त्रिवेणी का संगम खूबसूरत समुद्र तट मन को आकर्षित कर रहा था।

विवेकानंद रॉक मेमोरियल (कन्याकुमारी) :

मंदिर घूमने के बाद हमलोगों ने विवेकानंद रॉक मेमोरियल के लिए टिकट लिया। वहाँ जाने के लिए नाव से जाना होता है क्योंकि विवेकानंद मेमोरियल समुद्र के अंदर 500 मीटर चट्टान के ऊपर है। समुद्र की सुखद हवा और नाचती लहरों के बीच चट्टान पर ये स्मारक बनाया गया है। कहा जाता है कि यहीं पर विवेकानंद को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यहाँ घूमने के बाद हमने दोपहर का खाना खाया और विश्रामगृह वापस आ गए। कन्याकुमारी सूर्योदय के दृश्य के लिए काफी प्रसिद्ध है। फिर हमलोग ट्रेन से तिरुवनंतपुरम के लिए निकल पड़े। तिरुवनंतपुरम पहुंचने के बाद हम शाम में कोवलम् बीच गए। वहाँ सबने बहुत मौज-मस्ती किया। दूसरे दिन सुबह-सुबह हम श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर

के लिए निकले।

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर :

यह भगवान विष्णु का मंदिर है। इसे दुनिया का सबसे धनी मंदिर माना जाता है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु की विश्राम अवस्था में मूर्ति है। मंदिर में दर्शन के लिए पुरुषों को धोती और महिलाओं को साड़ी पहनना अनिवार्य है। वहीं से हमने धोती खरीदी, फिर दक्षिण भारतीय वस्त्र पहन कर हमने मंदिर में प्रवेश किया। मंदिर में बहुत ज्यादा ही भीड़ थी, वहाँ स्पेशल टिकट की भी व्यवस्था थी, जिससे थोड़ा कम समय लगा और हम दर्शन करके जल्दी निकल गए। उसके बाद हमलोग नेपियर संग्रहालय देखने गए। यह एक कला और प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय है। वहाँ आर्ट गैलरी और मछलीघर (जिसमें कई प्रकार की मछलियाँ थी) को देखकर बच्चे बहुत मजा कर रहे थे। फिर वहाँ से हम वेली पार्क निकले। वहाँ बच्चों ने टॉय ट्रेन, बोटिंग और पतंग उड़ाकर काफी मस्ती की। अगले दिन हम तिरुवनंतपुरम् से अलाप्पुझा(आलेप्पी) निकल गए। वहाँ वैकवाटर, नहरें, लैगून और समुद्र तट हैं।

हाउसबोट :

आलेप्पी में हाउसबोट क्रूज बहुत लोकप्रिय है। मेरा हाउसबोट का अनुभव पहला था। हाउसबोट देखकर बहुत अच्छा लग रहा था। यह बिल्कुल होटल की तरह ही था। होटलों में जैसी सुविधाएं होती हैं, वैसे ही सारी सुविधाएँ वहाँ मौजूद थीं। हम चार परिवारों ने उस बोट पर एक दिन और रात गुजारा। बहुत मौज मस्ती नाच-गाना भी हुआ। उस दिन रूबी भाभी और मेरी छोटी बेटी विनी का जन्मदिन भी था, जिसे हमने हाउसबोट पर ही मनाया। हमने बैकवाटर में बोट रेस का भी मजा लिया।

पूरे यात्रा में हाउसबोट का अनुभव मेरे लिए सबसे यादगार रहा। केरल यात्रा के दौरान मैंने केरल के भोजन का बहुत आनंद लिया। वहाँ खाने में कई व्यंजन होते थे। हाउसबोट के बाद हमलोग आलेप्पी से ठेक्कडी के लिए निकल पड़े।

ठेक्कडी :

ठेक्कडी में हमने कथकली शो देखा। कथकली एक शास्त्रीय नृत्य नाटक है। कथकली में हमने देखा कि यह नृत्य-संगीत और अभिनय का मिश्रण है। इसमें भारतीय महाकाव्यों से ली गई कथाओं का नाटकीकरण किया जाता है। इसमें जो कलाकार होते हैं उनकी वेशभूषा भव्य रहती है। कथकली की भव्यता और शान तो इसकी सज्जा और श्रृंगार के कारण ही होती है। सिर के ऊपर विशाल सज्जा, बड़े आकार का अंगवस्त्र, लंबा लहंगा जिसे कुशन की मोटी गद्दी के ऊपर पहना जाता है। चेहरे पर रंग लगाए जाते हैं। इसमें मैंने देखा कि कलाकार होठों के कंपन, आँखों की भंगिमाएं और उंगलियों की मदद से मुद्राएं बनाते हैं। कलाकार अपने प्रदर्शन में पूरी तरह डूब जाते हैं। इसके बाद हमने और एक दूसरा शो कलरीपायट्टू भी देखा।

कलरीपायट्टू :

यह दुनिया का सबसे प्राचीनतम (मार्शल आर्ट) है। मैंने वहाँ देखा कि कलाबाजी, कूद जैसी गतिविधियाँ हो रही थी और वे तलवार कटार, भाला, जैसे हथियारों का इस्तेमाल भी कर रहे थे। कलरीपायट्टू सिर्फ योद्धा कला ही नहीं है बल्कि तन-मन और मस्तिष्क को तंदरुस्त और संतुलित रखने वाली कला भी है। जहाँ वे कला करते हैं वहाँ मैंने देखा गड्ढा था, जो गीली लाल मिट्टी से बना था, शायद चोटों से बचाव के लिए होते होंगे। ठेक्कडी में हमने हाथी की सवारी की, हाथी अपने सूंड से आशीर्वाद भी दे रहे थे। उसके बाद वहीं चॉकलेट फैक्ट्री थी। वहाँ से बच्चों ने काफी चॉकलेट खरीदा। उसके बाद हमलोग मुन्नार के लिए निकल पड़े। रास्ते में हमें खड़ के पेड़, नारियल पेड़, इलायची, काली मिर्च, चाय के बगान सब देखने को मिले। ठेक्कडी से मुन्नार रोड में हम स्पाइस गार्डन भी गए। वहाँ हमने तरह-तरह के मसालों के पेड़ जैसे- इलायची, कालीमिर्च, दालचीनी, लौंग, जायफल और कई तरह के

आयुर्वेदिक औषधियों के पौधे देखे। सबके बारे में जानकारी ली। वहां मौजूद दुकान से दवा और मसाले खरीदे। वहाँ के मसालों की बात क्या बताऊँ, आप जाइए और खुद अनुभव करिए।

मुन्नार :

देश में कश्मीर के अलावा और भी स्वर्ग मौजूद है, ईश्वर का अपना देश माने जाने वाले केरल के मुन्नार को देखकर आप भी यही कहेंगे। मन को हर्षित कर देने वाली हरियाली, नीलगिरी की घुमावदार पहाड़ियाँ और घाटियाँ... ऊँचाई से गिरते झरने और ठंडा मौसम... इस हिल स्टेशन की घुमावदार गोल-गोल पहाड़ियों पर एक ही ऊँचाई के चाय के पौधे ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे हरे मखमली कालीन बिछा दिए गए हों। जैसे-जैसे गोल-गोल पहाड़ियों पर रास्ते घूम रहे थे वैसे-वैसे मेरा सर भी घूम रहा था। मैं सुंदर नजारों को बादलों, पहाड़ों, झरनों और साथ ही बज रहे संगीत के साथ समेटे चली जा रही थी। फिर हम रात में होम स्टे पहुँचे। अगले दिन सुबह जब बाहर का नजारा देखा तो मैं क्या बताऊँ... ऐसा लग रहा था जैसे मैं पहाड़ों और बादलों के बीच घिर गई हूँ। बहुत सुंदर नजारा... आँखों में जैसे वहाँ का दृश्य चित्रकारी की तरह छप गया है।



वहाँ हमलोगों ने मुन्नार चाय म्यूजियम भी देखा। उसके बाद हमलोग होम स्टे पहुँचे। उस दिन हमलोगों ने सोचा कि केरल का पारंपरिक भोजन सादया क्यों ना रात में खाया जाए? उन्होंने बड़े अच्छे से केले के पत्ते पर भोजन परोसा। उसमें कई तरह के व्यंजन थे। मुझे तो किसी का नाम भी नहीं पता था लेकिन उन्होंने हर व्यंजन का नाम बताया और किसे कैसे खाना है, इसका तरीका भी बताया। बहुत अच्छा लगा मुझे, यह सब मेरा नया अनुभव था। फिर खाने के बाद यह भी बताया कि पत्ते को कैसे मोड़ना है।

अगले दिन हम लोग मुन्नार से कोच्चि के लिए निकल पड़े क्योंकि चेन्नई के लिए कोच्चि से हमारी ट्रेन थी। फिर चेन्नई से भुवनेश्वर की ट्रेन थी। अरब सागर की रानी के नाम से कोच्चि प्रसिद्ध है। कोच्चि में ज्यादा घूम नहीं सके क्योंकि उतना समय नहीं था। बस वहाँ हम भारतीय नौसेना संग्रहालय गए। वहाँ हम लोग डिनर करके स्टेशन पहुँचे। ट्रेन आई और हम चेन्नई के लिए निकल गए। सुबह 4:00 बजे मेरे पति के मोबाइल में सूचना आई कि चेन्नई से विजयवाड़ा स्टेशन तक विवेक एक्सप्रेस आज के लिए रद्द कर दी गई है। अब क्या था सूचना पढ़ते ही उन्होंने सभी को सूचित किया। नई योजना बनाई और हम लोग काटपाडी स्टेशन उतर गए। अब वहाँ से सबने सोचा कि किसी तरह विजयवाड़ा तक पहुँच जाएँ फिर वहाँ काटपाडी से अपनी ट्रेन विवेक एक्सप्रेस से भुवनेश्वर चले जाएंगे। चूंकि काटपाडी से हमारी टिकट तो थी नहीं इसलिए हमलोगों को जो भी ट्रेन मिली उसी में सवार हो गए। टीटी से बात करके एक या दो सीट ही मिली। किसी तरह छः घंटे हमने ऐसे ही काटे। बच्चे परेशान हो रहे थे लेकिन उन्होंने बहुत साथ दिया। हम विजयवाड़ा स्टेशन पहुँच गए। फिर वहाँ से हमारी ट्रेन विवेक एक्सप्रेस थी। हमने स्टेशन पर ही खाना खाकर ट्रेन का इंतजार किया। आखिर में हमारी ट्रेन आई और हम अगले दिन सुबह 13 अक्टूबर को भुवनेश्वर पहुँच गए। एक लंबी यात्रा समाप्त हुई। सबलोगों ने एक दूसरे से विदा लिया और अपने-अपने घर गए लेकिन ये यादें जिंदगी भर के लिए साथ रहेंगी।



पंच लिंगेश्वर

श्रीमती रोमा कुमारी,

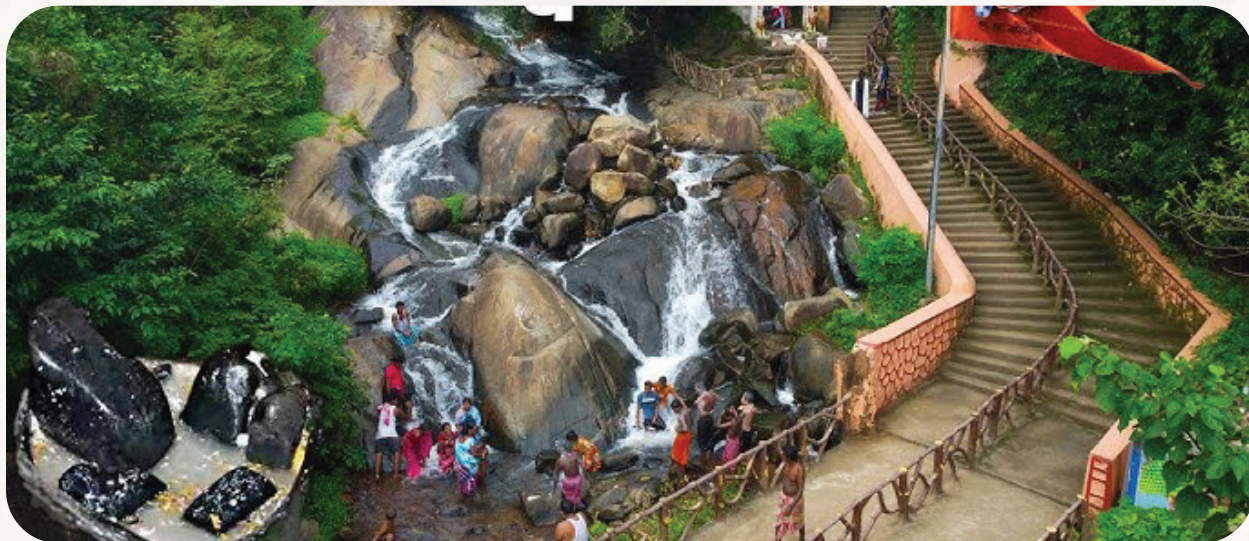
पत्नी – श्री सूरज कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

ओडिशा के बालासोर जिले की पहाड़ियों के बीच बसा पंचलिंगेश्वर एक धार्मिक स्थल है, जो अपने पांच शिवलिंगों के लिए प्रसिद्ध है। यह पवित्र स्थान आध्यात्मिक महत्व, प्राकृतिक सुंदरता के साथ शांत वातावरण भी प्रदान करता है। यह रेमुना ब्लॉक के अंदर आता है। यहाँ जाने के लिए बालेश्वर से बस से जाना पड़ता है। यह बालेश्वर से लगभग 30 किलोमीटर दूर है। किराए की टैक्सी के माध्यम से 30 मिनट से 45 मिनट का समय लगेगा। पंच लिंगेश्वर मंदिर जाने के लिए नजदीकी रेलवे स्टेशन दो हैं- एक 'सोरो' रेलवे स्टेशन है और दूसरा 'बालेश्वर'। ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में स्थित एकमात्र निकटतम हवाई अड्डा बीजू पटनायक हवाई अड्डा है। भुवनेश्वर से कई वातानुकूलित बसें उपलब्ध हैं। बस के माध्यम से कोई भी राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-60 के रास्ते में सेरगढ़ में उतरकर यहाँ पहुँच सकता है। सेरगढ़ से यह 20 किमी दूर है। इस जगह से कई नियमित बसों और टैक्सियों द्वारा पहुँचा जा सकता है या फिर किराए की टैक्सी बेहतर विकल्प है।

यह मंदिर नीलगिरी पहाड़ी पर है जिसके लिए लगभग दो सौ पचास सीढ़ियाँ चढ़कर जाना पड़ता है। इतनी सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद ही आप शिवलिंग के दर्शन कर सकते हैं। सीढ़ियाँ चढ़ने में बच्चे और वृद्ध लोगों को थोड़ी समस्या हो सकती है। यहाँ जाने के दौरान अपने साथ पानी की बोतल ले जाना न भूलें, हालांकि थोड़ी-थोड़ी दूर पर प्रतीक्षा के लिए जगह होती है। असल में यह मंदिर पांच शिवलिंगों का है जिसके ऊपर पानी की अविरल धारा बहते रहती है। यह बारहमासी धारा है, जो इस क्षेत्र का मुख्य आकर्षण है। लोग बहती धारा में पाँचों पत्थर (शिवलिंग) को छूने की कोशिश करते हैं। बारिश के दिनों में यह धारा इतनी तेज हो जाती है कि कुछ भी बह सकता है। इससे जो पानी निकलता है, आगे जाकर झरने का रूप ले लेता है। गर्मी के दिनों में लोग उस बहते पानी में स्नान करते हैं। एक बार बारिश के समय में झरने का बहाव बहुत तेज था, उस समय मेरे देवर जी भी पूजा करने के लिए गए थे। उन्होंने जैसे ही शिवलिंग को छूने के लिए अपना हाथ पानी में डाला वैसे ही तेज बहाव में उनका चश्मा पानी में बह गया। उस समय परिवार के सदस्य बोलने लगे कि यह चश्मा भोले बाबा ने अपने पास रख लिया। पश्चिम बंगाल से बहुत सारे सैलानी जब जगन्नाथ पुरी घूमने आते हैं तो इस दौरान पंचलिंगेश्वर भी उनके घूमने की सूची में शामिल होता है।

इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि शिवलिंग को वनवास के दौरान भगवान राम की पत्नी सीता ने स्थापित किया था। एक अन्य कहानी यह है कि राजा बाणासुर ने इस स्थान पर स्वयंभू लिंगों की सुंदरता को देखते हुए पूजा की थी। पौराणिक कथाओं के मुताबिक, राजा बाणासुर बाली का पुत्र था और भगवान शिव का भक्त था। इतिहासकार

की मानें तो दो सौ साल पहले कृष्ण चंद्र मर्दराज हरिचंदन को 1849 ईस्वी में सिंहासन पर बैठाया गया था। उनकी रानी ने एक सपना देखा था जिसमें भगवान शिव ने उन्हें आहुति घाटी के पूर्व में पानी की बहती धारा के एक गड्ढे में एक बड़े चट्टान में उत्कीर्ण अपने पांच प्रतीकों की पूजा करने का आदेश दिया था। रानी ने राजा को अपने सपने के बारे में बताया। राजा अपने दरबारियों, सलाहकारों और मंत्री के साथ रानी द्वारा सपने में देखे गए विवरण के अनुसार आहुति वन में गया और 5 शिवलिंगों की खोज की। अंत में उन्हें भगवान शिव के उन प्रतीकों को स्थानांतरित करने में सफलता मिली। सभी ने 'जय बाबा पंचलिंगेश्वर' का नारा लगाया। उस दिन के बाद से उस स्थान का नाम पंचलिंगेश्वर पड़ गया। राजा ने प्रतीकों की पूजा की और बाबा पंचलिंगेश्वर की आराधना के लिए सभी प्रकार की व्यवस्था की।



उन्होंने बासुदेवपुर के स्वर्गीय बिहारी कर को पूजा के लिए पहला पुजारी नियुक्त किया। उस दिन से लोग पंचलिंगेश्वर की पूजा करने लगे, जो कभी सदियों से गुप्त था।

पंचलिंगेश्वर मंदिर के ऊपर बाणादेवी का एक और मंदिर है। उस मंदिर के सामने एक छोटी सी झील है। स्थानीय लोगों के अनुसार यह तालाब किसी बाहरी जल प्रवाह से जुड़ा नहीं है, बल्कि अपने आप बहने वाला है। तालाब के पास बैठकर आप झील के तल से आने वाले बुलबुले को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। पहाड़ी की चोटी पर कई छोटे झरने हैं जो आगंतुकों को मंत्रमुग्ध कर देने वाले हैं। लोग यहां पहाड़ पर घूमते हैं। रात में उस तालाब में जंगल के हाथी पानी पीने आते हैं। मंदिर कुलडीहा जंगल से घिरा हुआ है। मंदिर के दूसरी तरफ वन विभाग का क्षेत्र है। उधर बहुत सारे जंगली जानवर, तितली, पशु-पक्षी इत्यादि विचरण करते हैं। फोटोग्राफी के लिए यह बहुत ही सुंदर जगह है। विविध प्रकार की चिड़ियाँ, तितली इत्यादि आराम से देखे जा सकते हैं। दिन में तो हाथी नजर नहीं आते हैं लेकिन उसके गोबर से आप पता लगा सकते हैं कि रात में यहाँ हाथी आया था। आजकल जो रील बनाने का प्रचलन बढ़ा है, इसके कारण बहुत सारे युवा इस झरने और पहाड़ के बीच अपने फोटो, वीडियो बनाते हैं और उसे सोशल मीडिया पर अपलोड करते हैं। यह 1-2 दिनों की यात्रा के लिए एक अच्छी जगह है। हरियाली और बहती धारा की सुखदायक ध्वनि के बीच मंदिर का स्थान एक शांत वातावरण बनाता है। आसपास की पहाड़ियों से लुभावने दृश्य देखने को मिलते हैं, जो इसे प्रकृति प्रेमियों और शांति चाहने वालों के लिए एक आदर्श स्थान बनाते हैं। कुल मिलाकर पंचलिंगेश्वर एक अनूठा और आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है।



पार्श्वनाथ पर्वत की मेरी यात्रा

श्री सतेन्द्र कुमार राम

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

झारखंड का पार्श्वनाथ पर्वत, जैन समुदाय के लिए सबसे पवित्र और पूजनीय स्थलों में से एक है। यह एक प्रमुख तीर्थ स्थल है। जैनियों के 24 तीर्थंकरों में से 20 को पार्श्वनाथ पहाड़ियों पर निर्वाण मिला। इस पर्वत का नाम 23वें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ के नाम पर रखा गया है।



यह लेख मेरी पार्श्वनाथ पर्वत यात्रा के विषय में है। मैं कोडरमा जिला, झारखण्ड राज्य का निवासी हूँ। यह पर्वत मेरे घर से लगभग 110 किलोमीटर है। मेरी बहुत दिनों से इच्छा थी मैं पारसनाथ पर्वत की यात्रा करूँ। संयोग से मुझे भगवान के दर्शन का अवसर मिला। यह मेरे जीवन की सबसे रोचक एवम अद्भुत यात्रा रही।

सतह से पर्वत की चोटी तक की दूरी लगभग 9 किलोमीटर है। इस पर्वत पर चढ़ने के लिए प्रमुख तीन साधन हैं- पहला- पैदल, दूसरा- पालकी और तीसरा साधन- मोटरसाइकिल है। मेरी पार्श्वनाथ पर्वत की यात्रा मोटरसाइकिल से हुई। चोटी से कुछ दूरी पहले उतरकर आगे की यात्रा मैंने पैदल पूरी की। सतह से चोटी तक का सफ़र बहुत ही आनंदमय रहा। सफ़र के दौरान पहाड़ों के बीच का सुन्दर दृश्य देखकर मन आनंदित हो उठा। पहाड़ों के बीच सफेद मंदिर की छटा अद्भुत प्रतीत होती है। चोटी के चारों ओर का दृश्य अत्यंत मनोरम है, जिसे शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। इसका स्वयं अनुभव करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति मोटरसाइकिल से यात्रा करना चाहते हैं तो सुरक्षा उपकरण (हेलमेट आदि) लगाकर ही यात्रा करें। मेरी कामना है कि मैं फिर एकबार यह यात्रा करूँ और अगली बार पूरी यात्रा पैदल करूँ।



कश्मीर - धरती का स्वर्ग

श्री शरत चंद्र महारणा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मैंने अपने परिवार के सदस्यों के साथ मई 2024 के दौरान कश्मीर की चार दिवसीय यात्रा की योजना बनाई। दिल्ली से हमने श्रीनगर के लिए उड़ान भरी। अपनी खिड़की से मैं बर्फ से ढँके पहाड़ और खूबसूरत घाटियाँ देख सकता था और बहुत उत्साहित था। जब हम श्रीनगर पहुंचे तो कैब ड्राइवर हमें रेलवे रेस्ट हाउस ले गया। उस शाम हम शालीमार बाग और निशांत बाग गए और फिर हमने डल झील में शिकारे की सवारी की। डल झील पर हमने तैरते बाज़ार देखे।



अगली सुबह हम पहलगाम के लिए निकले। वहां हमने हर तरफ बहती झेलम और पहाड़ देखे। हम ग्लेशियर पॉइंट गए। मैं बर्फ को अपने हाथों में पकड़कर बहुत रोमांचित था।

तीसरे दिन हम गुलमर्ग के लिए निकले। हम गोंडोला पॉइंट गए जहां से हमने ऊंचे पहाड़ों के बीच चरखी की सवारी की। मैंने पीली चरखी से कई तस्वीरें लीं। जब हम नीचे उतरे तो हमने घोड़े की सवारी की। घोड़ा हमें सड़क से अलग रास्ते पर ले गया और हम सभी ने घोड़े की सवारी का आनंद लिया। हमने रेस्तरां में कुछ स्वादिष्ट खाना खाया।

कश्मीर अपनी समृद्ध वनस्पतियों और जीवों के लिए व्यापक रूप से प्रसिद्ध है। यह स्थान औषधीय पौधों के साथ-साथ सजावटी पौधों के लिए भी बहुत महत्व रखता है। कश्मीर खूबसूरत जंगली जानवरों का घर है, खासकर हंगुल जो पूरी दुनिया में मशहूर है। नदियाँ, झीलें, शक्तिशाली झरने, सरू के पेड़ों की लंबी कतारें पर्यटकों के लिए बहुत रमणीय आकर्षण हैं। हमने सुना था कश्मीर धरती का स्वर्ग है। जब हम कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता को देखते हैं तो यह वास्तव में धरती पर स्वर्ग जैसा प्रतीत होता है। हम इतनी खूबसूरत और अद्भुत जगह को छोड़ने की स्थिति में नहीं थे। कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता हमेशा हमारी स्मृति में बनी रहेगी। जब हम श्रीनगर से निकले तो हम सभी की आंखों में आंसू थे।



जीवन अनुभव

सुश्री श्रेया तिवारी
लिपिक

वर्ष 2020, जब पूरी पृथ्वी "कोरोना" विषाणु के संक्रमण से भयभीत थी। लोगों ने जीवन जीने की उम्मीद ही छोड़ दी थी। वर्ष 2021 एक नई उम्मीद की किरण लेकर आया। मेरा दाखिला ऐडेमस यूनिवर्सिटी के बीकॉम में हुआ और मुझे यूनिवर्सिटी के बैडमिंटन टीम में शामिल कर लिया गया। वर्ष 2022 में मेरे अधिनायकत्व में ऐडेमस टीम पूर्व जोन की विजेता बनी। हमारी टीम ओपी जिंदल यूनिवर्सिटी, रायगढ़ में विजेता बनी। हम सब बड़े खुश थे। इसके बाद ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी चैंपियनशिप खेलने के लिए हमें लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, जालंधर जाने का अवसर मिला। हमारी टीम ने ऑल इंडिया चतुर्थ स्थान प्राप्त किया और हमें "खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स" में हिस्सा लेने के लिए लखनऊ जाने का अवसर मिला।

वहां पर भी हमारी टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया और "ऐडेमस यूनिवर्सिटी" टीम ने कांस्य पदक जीता। हमारे मैचों का "डीडी स्पोर्ट्स" पर लाइव प्रसारण हुआ। उत्तर प्रदेश सरकार के खेल मंत्री ने हमें कांस्य पदक दिया। इस सारे घटनाक्रम ने हमारा उत्साहवर्धन किया और हमारे सपनों को एक नई दिशा दी।

इस बीच हमें यह पता चला कि "खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स" के टॉप तीन टीम के सदस्यों को "वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स" के लिए जो टीम जाएगी, उसके चयन के लिए अंतरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ेगी। उसके चयन का मैच ओडिशा के भुवनेश्वर में "केआईआईटी यूनिवर्सिटी" में होना था।

यह हमारे लिए बड़ा चुनौतीपूर्ण पल था। हमें भारत के शीर्ष राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी थी। जून-जुलाई की चिलचिलाती धूप और बेतहाशा गर्मी में हमें यह मैच खेलना था। हमलोगों ने शीर्ष राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों को हराकर सिलेक्शन मैच के फाइनल में जगह बनाई। फाइनल में हमारा मुकाबला वर्ल्ड नंबर 56 के साथ होना था जिन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खिताब जीते थे। फाइनल मैच भरी दुपहरी में हो रही थी। बैडमिंटन हॉल में जैसे लू चल रही थी।

हमने उसी गर्मी में उन्हें तीन सेटों में हराया। इस प्रकार हमारा चयन "वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स" के लिए हुआ जो चीन के चेंगडू शहर में होना था। हम लोग बड़े खुश थे।

वक्त कैसे बीता हमें पता ही नहीं चला और वह दिन भी आ गया जब भारतीय टीम ने चीन के लिए दिल्ली हवाई अड्डे से प्रस्थान किया, जिसकी सदस्य मैं भी थी। हमारा विमान बैंकॉक होकर चेंगडू हवाई अड्डे पहुंचा। दो दिन बाद "वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स" का उद्घाटन समारोह था जिसका उद्घाटन चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने किया। यह मेरे जीवन का अविस्मरणीय पल था।

विश्व के विभिन्न खिलाड़ियों के साथ हमें खेलने का अनुभव हुआ और वहां बिताए पलों को हमने जिया। आज भी मैं जब उन पलों को याद करती हूं तो मन प्रफुल्लित हो जाता है।



मैंने भी देखा है चिलिका झील

श्री विक्रम मिश्र

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

मेरे पिताजी मुझे बचपन में पहली बार ओडिशा के प्रमुख पर्यटन स्थल चिलिका ले गए थे। हम लोग भुवनेश्वर से ट्रेन में बैठकर बालूंगा स्टेशन गए थे।

रेलवे स्टेशन भी मानो इस धरती की तरह एक अलग दुनिया है। किसी को कोई परवाह नहीं कि कितने लोग आये और कितने चले गए। मेरे गाँव के बस का कंडक्टर सब यात्रियों का ख्याल रखता है पर रेलवे कभी इस बात की परवाह नहीं करती कि कौन ट्रेन में चढ़ा और कौन छूट गया। गजब की भीड़ होती है ट्रेन के जनरल डिब्बों में! वहां कोई किसी का इंतजार नहीं करता और न ही दूसरों के प्रति सहानुभूति रखता है। एक सीट के लिए योग्यतम की लड़ाई छिड़ जाती है। ट्रेन के पहुँचते ही लोग एक-दूसरे को धक्का देकर सीट के लिए ऐसे लड़ते हैं मानो हिंसक जंतु का आत्मा आ गयी हो इनपर। मुश्किल से एक सीट मिली जिसमें हम तीन लोग सिकुड़कर बैठ गए। कितनों को तो बैठने की जगह भी नहीं मिली। इंजन एक तेज हॉर्न के साथ चालू हुआ, फिर कौन जाने कितने गाँव, खेत, जंगल, पहाड़ पीछे रहे, ट्रेन कहाँ-कहाँ रुकी, कहाँ लोग चढ़े, कहाँ उतर गए। उन अनजान लोगों के शोर-गुल के बीच, मैं डर गया था कि ये कौन लोग हैं और अपने घर गाँव को याद करने लगा। पिताजी बोले कि आजकल लोग देशों-विदेशों में घूम रहे हैं, और तू ये पास वाले चिलिका जाने से डर रहा है? हम जिस चिलिका को देखने जा रहे हैं, वहां हजारों मील दूर साइबेरिया से हर साल पंछी बिना डरे आते हैं और सर्दी के बाद वापस चले भी जाते हैं।

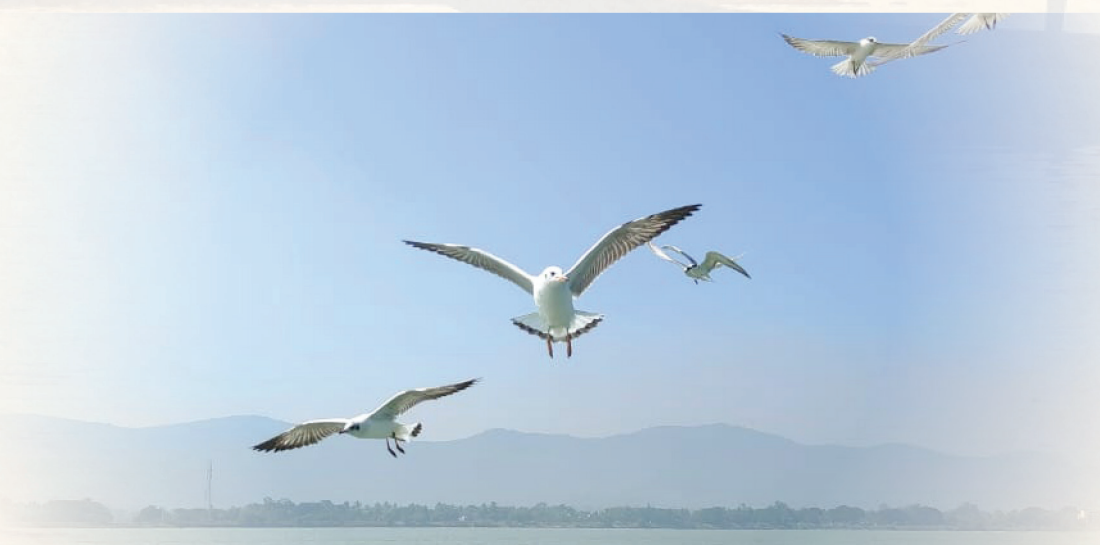
मैं तो चौंक गया। तब मुझे क्या पता था कि साइबेरिया कहाँ है और पंछी ट्रेन से आते हैं या उड़कर? किसी तरह उस भीड़ से भरी ट्रेन में हमने दो घंटे बिताए और फिर एक जगह पिताजी बोले, हम पहुँच गए चिलिका। जान में जान आई जब बालूंगा स्टेशन के सुकून भरी खुली हवा में हम उतर गए।

वहां से पिताजी हमें ले गए बालूंगा नौका जेटी में जहाँ से हम एक मोटर बोट में बैठकर कालीजाई द्वीप के लिए रवाना हो गए। पिताजी ने बताया चिलिका भारत की सबसे बड़ी तटीय झील है। चिलिका झील एशिया का सबसे बड़ा और विश्व का दूसरा सबसे बड़ा खारे पानी का लैगून है। चिलिका झील 70 किमी. लम्बी तथा 30 किमी. चौड़ी और लगभग 3 मीटर गहरी है। इसे दया और भार्गवी नदी से जल प्राप्त होता है। यह बंगाल की खाड़ी समुद्र का ही भाग था जो बाद में मिट्टी के जमा हो जाने से समुद्र से अलग होकर एक छिछली झील बन गयी है। सबसे ज्यादा आश्चर्य में डालने वाली बात ये है कि दिसम्बर से जून तक इस झील का पानी खारा रहता है और बरसात में इस झील का पानी मीठा हो जाता है।

चिलिका झील में नालाबण द्वीप, चिलिका झील पंछी अभ्यारण, डॉल्फिन अभ्यारण, पुरी नगर और मलुद प्रायद्वीप हैं। चिलिका झील विशाल क्षेत्र वाली कीचड़दार भूमि व छिछले पानी की खाड़ी है। पश्चिमी व दक्षिणी

छोर पूर्वी घाट की पहाड़ियों के आंचल में स्थित हैं। तमाम नदियाँ जो झील में मिट्टी व कीचड़ ले आती हैं, झील के उत्तरी छोर को नियंत्रित करती हैं। बंगाल की खाड़ी में उठने वाली उत्तरी तरंगों से एक 60 कि॰मी॰ (37 मील) लंबा घेरेदार बालू-तट जिसे रेजहंस कहा जाता है, बना और इसके परिणाम स्वरूप इस छिछली झील और इसके पूर्वी हिस्से का निर्माण हुआ। इस झील में बहुत सारे द्वीप हैं। संकरी नहरों से अलग हुए बड़े द्वीप मुख्य झील और रेतीली घेरेदार भूमि के मध्य स्थित हैं। कुल 42 कि॰मी॰² (16 वर्ग मील) क्षेत्रफल वाली नहरें झील को बंगाल की खाड़ी से जोड़ती हैं। इसमें छः विशाल द्वीप हैं पारिकुद, फुलबाड़ी, बेराहपुरा, नुआपारा, नलबण, और तम्पारा। ये द्वीप मलुद के प्रायद्वीप के साथ मिलकर पुरी जिला के कृष्णाप्रसाद राजस्व क्षेत्र का हिस्सा हैं। झील का उत्तरी तट खोर्धा जिला का हिस्सा है व पश्चिमी तट गंजम जिला का हिस्सा है। तलछटीकरण के कारण रेतीले तटबंध की चौड़ाई बदलती रहती है और समुद्र की तरफ़ मुख कुछ समय के लिये बंद हो जाता है। झील के समुद्री-मुख की स्थिति भी तेजी से उत्तर-पूर्व की तरफ़ खिसकती रहती है। नदी मुख जो 1780 में 1.5 कि॰मी॰ (0.9 मील) चौड़ा था चालीस साल बाद सिर्फ़ .75 कि॰मी॰ (0.5 मील) जितना रह गया। क्षेत्रीय मछुआरों को अपना रोजगार क्षेत्र बचाने व समुद्र में जाने के लिये झील के मुख को खोदकर चौड़ा करते रहना पड़ता है।

लगभग सैकड़ों गावों में रह रहे लाखों मछुआरों को आजीविका का साधन यह झील उपलब्ध कराती है। इसमें मौजूद मछलियों की विभिन्न प्रजातियाँ मछुआरों की आजीविका का मुख्य स्रोत हैं। चिलिका झील भारत की पहली ऐसी भारतीय झील है, जिसे सन् 1981 ई. में, रामसर घोषणापत्र के मुताबिक 'अंतरराष्ट्रीय महत्व की आर्द्र भूमि' के रूप में चुना गया था। यह मत्स्य संसाधनों में बहुत समृद्ध है, जो 132 तटीय गांवों में 1.5 लाख से अधिक मछुआरों को रोजगार प्रदान करती है। यहां पर नौसेना का प्रशिक्षण केंद्र अवस्थित है।



चिलिका झील मुख्य रूप से अप्रवासी पक्षियों के लिए एक अच्छी जगह है। यह झील कैस्पियन सागर, बैकाल झील, अरब सागर, रूस के सुदूर साइबेरिया हिस्सों, मंगोलिया के किर्गिज स्टेप्स, मध्य और दक्षिण-पूर्व एशिया, लद्दाख तथा हिमालय से हजारों मील दूर प्रवास करने वाले पक्षियों की मेज़बानी करती है। इस झील में हर साल लाखों की संख्या में पूरे विश्व की कई जगहों जैसे साइबेरिया, आस्ट्रेलिया, रूस, कनाडा, फ्रांस, ईरान, इराक और अफगानिस्तान आदि स्थानों से पक्षी आते हैं। पक्षियों का आगमन अक्टूबर से आरंभ होता है और वे फरवरी तक चिलिका झील में रहते हैं। यहां पक्षियों की अनगिनत प्रजातियों को इस दौरान देखा जा सकता है। यहां प्रवासी पक्षियों के झुंडों को देखना अपने आप में बेहद रोमांचक अनुभव होता है।

प्रवासी पंछी लगभग 12 हजार किमी. से भी ज्यादा की दूरी तय करके चिलिका झील आते हैं। चिलिका झील को 32 किमी. लंबी, संकरी, बाहरी नहर इसे बंगाल की खाड़ी से जोड़ती है। इस झील में डॉलफिन की दुर्लभ प्रजाति भी पायी जाती है। इस झील में लगभग 45% पंछी (भूमि), 32% जलपंछी और 23% बगुले हैं। यहाँ पर लगभग 37 प्रकार के सरीसृप और उभयचर निवास करते हैं। भारत में चिलिका झील इरावदी डॉल्फिन का एकमात्र निवास स्थान है, जिसे प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ (आईयूसीएन) द्वारा लुप्तप्राय प्रजातियों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। वास्तव में चिलिका झील में डॉलफिन का पाया जाना बेहद आश्चर्य भरा है।

चिलिका के अन्दर अनगिनत द्वीप हैं और कितने सारे पर्वत। कालीजाई चिलिका की अधिष्ठात्री देवी हैं। देवी कालीजाई का कालीजाई द्वीप पर्यटकों द्वारा सबसे अधिक बार देखे जाने वाले स्थानों में से एक है। यह द्वीप देवी कालीजाई के मंदिर के कारण धार्मिक पूजा के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है। स्थानीय लोग देवी में दृढ़ आस्था रखते हैं और चिलिका झील में हर मछुआरा मछली पकड़ने की गतिविधियों के लिए निकलने से पहले उनके सामने झुकता है। नियमित दिनों के अलावा मकर संक्रांति के समय मंदिर में सबसे अधिक आगंतुक आते हैं। एक किंवदंती के अनुसार यहाँ पूजी जाने वाली देवी कालीजाई नाम की एक लड़की थी जो इस झील पर एक नाव के माध्यम से अपने ससुराल जा रही थी और एक भारी तूफान के बाद नाव पलट जाने से एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई। मंदिर उस स्थान पर बनाया गया था जहाँ नाव डूबी थी। स्थानीय लोग, मछुआरे, नाविक और यहाँ तक कि कुछ पर्यटक भी सुरक्षित यात्रा के लिए प्रार्थना करने के लिए मंदिर आते हैं।

एक दूसरी किंवदंती के अनुसार एक बार खोरधा के राजा ने पारिकुद द्वीप के खिलाफ युद्ध घोषणा करके सैन्य भेज दिया। खोरधा के सैन्य पारिकुद के पास आकर सातपड़ा में शिविर लगाए क्योंकि पारिकुद और सातपड़ा के बीच में चिलिका की विशाल जलराशि फैली है। अगले दिन सुबह जब सारे सैन्य चिलिका के पास गए तो देखा कि पारिकुद के गुरुबाई नामक जगह में हजारों एरा पक्षी खड़े हैं जो कि दूर से पारिकुद के सैन्य जैसा प्रतीत हुए। अपने सैन्य से ज्यादा संख्या में दुश्मन के सैन्य देखकर वो लोग पारिकुद पर हमला करने का ख्याल छोड़कर वापस चले गए। पारिकुद के लोग इसको देवी काली की कृपा कहकर माँ काली जयी का नारा लगाया जो बाद में कालीजाई नाम से प्रसिद्ध हुआ। सन् 1124 में देवी माँ कालीजाई की पूजा-अर्चना के लिए पारिकुद के राजा जगन्नाथराज ने एक छोटा मंदिर बनाया था। 1803 में जब अंग्रेज ओडिशा पर कब्जा करने आए थे तो पारिकुद के तत्कालीन राजा बालूकेश्वर हरिचंदन ने माँ कालीजाई के शरण में आश्रय लिया था। समय के साथ जब माँ कालीजाई का मंदिर भग्न अवस्था में आ गया तो साल 1882 में राजा गौरचन्द्र मानसिंह हरिचंदन ने माँ कालीजाई के नए मंदिर का निर्माण कराया था। कालीजाई द्वीप 29 एकड़ से थोड़ा बड़ा है।

माँ कालीजाई के दर्शन उपरांत हम फिर से उसी बोट से चिलिका के जलराशि के ऊपर पंछियों के साथ खेलते हुए बालूगां वापस आये और ट्रेन से न आकर एक बस से भुवनेश्वर लौट आए, जहाँ से फिर अपने गाँव वापस चले गए। बाद में भी मैं कई बार चिलिका गया हूँ पर पिताजी के साथ बचपन में पहली चिलिका यात्रा की स्मृति अब भी मेरे मन में ताज़ा है।



आत्म प्रेम

श्री गोबिन्द दीप

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
खोरदा रोड मंडल

चेहरे पर मुस्कराहट रहे
आँख से आँख मिलाओ,
चेहरे को फिर और एक बार निहारो
और होश संभलने के समय से
देख रहे उस चेहरे से
“हाँ! मैं तुमसे प्यार करता हूँ” कहो।

हाँ, उस चेहरे वाले इंसान की प्रशंसा करो
चिल्लाकर कहो या मन ही मन कहो
“अशेष धन्यवाद, आजतक के सब कुछ के लिए,
मुझे ‘मैं’ बनाने के लिए”
हाँ! “मैं अपने आप से बहुत प्यार करता हूँ” कहो,
अगली बार जब तुम अपने आपको
आईने के सामने पाओ !

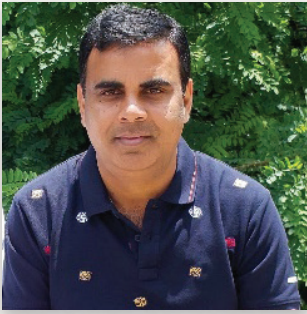
अपने से अधिक कोई और
तुम्हें जान सकता है क्या?
भूल-चूक अतीत के, आत्मग्लानि भूल
पहले खुद अपने आप को क्षमा करो,

स्वयं को अद्वितीय कहो और
बिना शर्त, अनुपम अपने आप को ग्रहण करो
पर एक श्रेयस्कर “मैं” की खोज न थमने पाए,
मन में आत्म विश्वास की मशाल जलाओ!

सुनो भाई, जो आपके पास नहीं, उसे
दूसरे को दे सकते हैं क्या ?
स्वयं सुगन्धित पुष्प ही सुरभित करती है संसार,
आत्म प्रेम व स्व जतन अपने आप को सर्वोत्तम उपहार
हृष्ट-पुष्ट बलिष्ठ तुम, कवच आत्मीय स्वजन के
भारत भूखंड का जैसे विन्ध्यगिरी और हिमालय !

चेहरे पर मुस्कराहट रहे
आँख से आँख मिलाओ,
चेहरे को फिर और एक बार निहारो
और होश संभलने के समय से
देख रहे उस चेहरे से
“हाँ! मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ” कहो!
अगली बार जब तुम अपने आप को
आईने के सामने पाओ !

-*-*-*



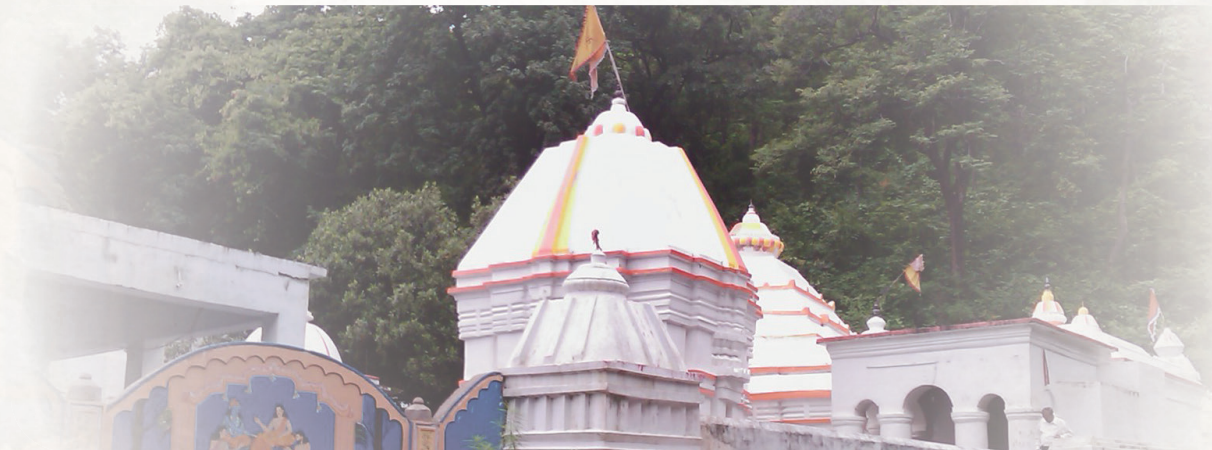
हरिशंकर

श्री प्रशांत कुमार मेहर

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

हरिशंकर एक प्रसिद्ध हिंदू तीर्थ स्थल है, जो ओडिशा राज्य के बलांगीर जिले में स्थित है। यह स्थल अपने प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है।

हरिशंकर मेरे गांव से 45 किमी दूर है। मैं कई बार इसका दौरा कर चुका हूं। पर्वत के दूसरी ओर प्रसिद्ध नृसिंहनाथ मंदिर स्थित है। वहां तक पहुंचने के दो रास्ते हैं, पहला सड़क मार्ग जो कि 75 किलोमीटर और दूसरा 14 किलोमीटर तक पहाड़ पर ट्रेकिंग करके आप जा सकते हैं। दोनों बहुत आनंददायक हैं। मैंने नृसिंहनाथ मंदिर के दोनों रास्तों से पहुंचकर दर्शन किया है।



हरिशंकर का नाम भगवान विष्णु के एक रूप से लिया गया है, जो यहां के मंदिर में पूजे जाते हैं। यह मंदिर एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है, जो अपने आप में एक अद्वितीय आकर्षण है। मंदिर के चारों ओर घने जंगल और हरे-भरे परिदृश्य हैं, जो यहां के सौंदर्य को और भी बढ़ाते हैं।

हरिशंकर का धार्मिक महत्व भी बहुत अधिक है। यहां के मंदिर में भगवान विष्णु की पूजा की जाती है और यह स्थल हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यहां के मंदिर में विभिन्न त्योहारों और उत्सवों का आयोजन किया जाता है, जो यहां के सौंदर्य और महत्व को और भी बढ़ाते हैं।

हरिशंकर का प्राकृतिक सौंदर्य भी परिपूर्ण है। यहां के आसपास के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे और जानवर पाए जाते हैं, जो यहां के सौंदर्य को और भी बढ़ाते हैं। यहां के पहाड़ी क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के खनिज भी पाए जाते हैं, जो यहां के आर्थिक महत्व को और भी बढ़ाते हैं।



त्योहार ओडिशा के

श्री द्विति कृष्ण दाश

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

त्योहार हमारी भारतीय संस्कृति और परंपरा का एक बड़ा हिस्सा हैं। ओडिशा में भी ऐसे ही कुछ त्योहार देखने को मिलते हैं। ये कहा जाता है कि ओडिशा में “बार मासरे तेरा पर्व” अर्थात् बारह महीने में तेरह पर्व साल भर पालन किया जाता है। राज्य में दुर्गा पूजा और रथ यात्रा के अलावा भी ऐसे कई त्योहार होते हैं, जिन्हें लेकर स्थानीय लोगों में अत्यधिक उत्साह दिखाई देता है। ओडिशा में मनाए जाने वाले कुछ रंगीन त्योहार निम्न हैं-

रज परब :

यह आषाढ़ महीने के पहले दिन से शुरू होने वाला तीन दिवसीय त्योहार है। यह आमतौर पर जून के मध्य में पड़ता है। यह त्योहार बसु माता, पृथ्वी देवी को समर्पित है। इस अवधि के दौरान, देवी को आराम करने का अवसर देने के लिए कोई कृषि कार्य नहीं होता है। पहले दिन को पहला रज, दूसरे दिन को उचित रज और तीसरे दिन को बसी रज कहा जाता है। लड़कियां तरह-तरह के झूले झूलती हैं। लोग रिश्तेदारों और दोस्तों के बीच पीठा (चावल के पकवान) का आदान-प्रदान करते हैं। रज को मिथुन संक्रांति भी कहते हैं। कई जगहों पर इसे चार दिनों तक मनाया जाता है और इसे बसुमता पूजा के नाम से भी जाना जाता है।

धनु यात्रा :

ओडिशा का धनु यात्रा महोत्सव 11 दिनों का त्योहार है। ओडिशा में प्रत्येक वर्ष धान की कटाई के अंत में आयोजित होने वाले धनु यात्रा महोत्सव के दौरान भगवान श्री कृष्ण से संबंधित प्रसंग लोक कथा विविध रूपों में प्रस्तुत किए जाते हैं।

विश्व का सबसे बड़ा मुक्ताकाश रंगमंच महोत्सव ‘धनु यात्रा’ ओडिशा के बरगढ़ जिले में मनाया जाता है। धनु यात्रा महोत्सव एक मुक्ताकाश रंगमंच महोत्सव है जो 5 वर्ग किमी से अधिक तक फैला हुआ है एवं इसमें एक गांव तथा एक शहर शामिल है। प्रत्येक ग्रामीण की इसमें एक भूमिका होती है तथा पूरे ग्यारह दिनों के लिए, बरगढ़ के लोग राजा कंस के आदेश को मानते हैं, जिला प्रशासन के आदेश को नहीं।

बरगढ़ के किनारे से प्रवाहित होने वाली जीरा नदी को यमुना नदी और नदी के दूसरी ओर ‘अंबापाली’ के रूप में पार किया जाता है, जो पौराणिक नामकरण के अनुसार ‘गोपापुरा’ बन जाती है।

कार्तिक पूर्णिमा/बाली यात्रा :

ओडिशा से बाली तक प्राचीन समुद्री व्यापारियों द्वारा की गई यात्राओं को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है। यह कार्तिक पूर्णिमा के दिन पड़ता है। इस दिन बोइता नामक नावों को नदियों और समुद्र में छोड़ा जाता है। यह उत्सव एक सप्ताह तक मनाया जाता है। इस दौरान कटक में एक प्रमुख वार्षिक व्यापार मेला भी आयोजित किया जाता है।

गजलक्ष्मी पूजा :

यह माता लक्ष्मी को समर्पित 11 दिवसीय उत्सव है, जो कुमार पूर्णिमा से शुरू होता है। विशेष रूप से यह ठेंकनाल, अनुगुल, केंद्रपाडा आदि जिलों में धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस त्योहार में दुर्गा पूजा की तरह पूजन और विसर्जन पर्व भी मनाया जाता है।

नुआखाई :

पश्चिम ओडिशा के सांस्कृतिक क्षेत्र में नुआखाई विशेष रूप से मनाया जाता है। यह धान की नई फसल के स्वागत के लिए मनाया जाता है। यह गणेश चतुर्थी के अगले दिन पड़ता है। विभिन्न क्षेत्रों में पुजारी तिथि की गणना करते हैं और एक निश्चित शुभ मुहूर्त पर स्थानीय देवी को नया अनाज चढ़ाते हैं। इस मौके पर लोग एक दूसरे को "नुआखाई जुहार" कहकर बधाई देते हैं। शाम में लोक नृत्य और गीत कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जिन्हें "नुआखाई भेटघाट" कहा जाता है।

शीतल षष्ठी :

यह अद्भुत त्योहार कार्निवल के रूप में मनाया जाने वाला एक बहुत ही लोकप्रिय त्योहार है। इस त्योहार में भगवान शिव एवं माता पार्वती के विवाह का उत्सव मनाते हैं। यह ओडिशा के सबसे लोकप्रिय त्योहारों में से एक है और यह ओडिशा के सभी शिव मंदिरों में मनाया जाता है। यह त्योहार ज्येष्ठ के महीने में शुभ पंचमी के दिन मनाया जाता है। यह मुख्य रूप से ओडिशा के पश्चिमी भाग में मनाया जाता है।

कुमार पूर्णिमा :

यह उत्सव आश्विन मास की प्रथम पूर्णिमा को पूरे राज्य में मनाया जाता है। यह मुख्य रूप से अविवाहित लड़कियों द्वारा मनाया जाता है, जो सुंदर पति के लिए प्रार्थना करती हैं। मान्यता के अनुसार, सुंदर भगवान कार्तिकेय, जिन्हें कुमार के नाम से भी जाना जाता है, का जन्म इसी दिन हुआ था।

प्रथमाष्टमी :

ओडिशा में घरवाले अपनी पहले बच्चे की लंबी उम्र की प्रार्थना करते हुए यह त्योहार मनाते हैं। एक विशेष व्यंजन "एंडुरी पीठा" है जो इस अवसर पर बनाया जाता है। इसका सांस्कृतिक महत्व यह है कि पहली संतान से

आमतौर पर परिवार के मुखिया के रूप में कार्यभार संभालने की उम्मीद की जाती है। यह मार्गशीर्ष माह की अष्टमी तिथि को पड़ता है।

वसंत पंचमी/ सरस्वती पूजा :

माघ शुक्ल पंचमी के पहले चंद्र पखवाड़े का पांचवां दिन सरस्वती पूजा के रूप में मनाया जाता है। सरस्वती हिंदू धर्म में ज्ञान और बुद्धि की देवी हैं। कई शैक्षणिक संस्थानों में भी यह त्योहार मनाते हैं। यह वसंत ऋतु के आगमन का भी प्रतीक है।

गणेश चतुर्थी :

आमतौर पर अगस्त में भगवान गणेश के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। यह मुख्य रूप से शिक्षण संस्थानों और छात्रों द्वारा मनाया जाता है। पंडालों में भगवान को मोदक और लड्डू का प्रसाद भोग लगाया जाता है।

दुर्गा पूजा :

ओडिशा के लोगों के लिए दुर्गा पूजा बहुत महत्वपूर्ण है। यह आश्विन के महीने में बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाने के लिए मनाया जाता है। यह त्योहार महिषासुर के वध और दुर्गा मां की शक्ति का उत्सव है। सड़कों पर चारों ओर रोशनी जगमगाती हुई नजर आती है। वहीं सैकड़ों स्थानों पर पंडालों में भगवान गणेश और कार्तिक के साथ देवी सरस्वती और लक्ष्मी के साथ दुर्गा मां की विशाल मूर्तियां स्थापित की जाती हैं। यह त्योहार ओडिशा में लोगों द्वारा मनाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है।

महाशिवरात्रि :

फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष में महाशिवरात्रि मनाया जाता है। विवाहित महिलाएं अपने जीवनसाथी की सलामती के लिए प्रार्थना करती हैं। अविवाहित महिलाएं एक आदर्श पति के लिए प्रार्थना कर सकती हैं। इस दिन और रात में शिव मंदिरों के दर्शन किए जाते हैं। बेल के फल और पत्ते भगवान को चढ़ाए जाते हैं।

दोल पूर्णिमा और होली :

दोल पूर्णिमा को दोल यात्रा के रूप में भी जाना जाता है, जो पूरे राज्य में धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया जाने वाला पांच दिवसीय दोल पूर्णिमा उत्सव है। दोल पूर्णिमा के बाद होली आती है। इस दिन, उड़िया कैलेंडर तैयार हो जाता है और देवता जगन्नाथ को अर्पित किया जाता है।

त्यौहार मनाए जाने में जितना आनन्द होता है उससे ज्यादा भाईचारे की झलक दिखाई देती है। महत्वपूर्ण बात है कि यह देश की प्राचीन परंपरा, संस्कृति और विचार को प्रदर्शित करते हैं।



हिंदी भाषा

सुश्री अनुष्का चौबे

सुपुत्री- श्री नवीन कुमार चौबे, स. लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी हमारी आत्मा,
हिंदी हमारी शान,
सभी भाषाओं में हमारी,
राष्ट्रभाषा है महान ।

सरल, सहज, एवं सुबोध यह,
भाषा बहुत ही न्यारी ।
गर्व है बहुत हमें,
भाषा है यह प्यारी ।

बने जगत की भाषा यह,
हमारी है अभिलाषा यहा
हर कोई जब अपनाएंगे,

निज भाषा हम बनाएंगे।
हिंदी भाषा का हो उत्थान,
बढ़ेगी तो ही देश की शान।
आओ लेते हैं हम प्रण,
हर कार्य करेंगे हिंदी में,

हर समय हिंदी अपनाएंगे,
हर समय हिंदी अपनाएंगे।
हिंदी भाषा की जय,
राष्ट्रभाषा की जय ।



विविधता से परिपूर्ण ओडिशा

सुश्री स्वागतिका साहू

सुपुत्री:- श्री गणेश्वर साहू, लेखापरीक्षक

ओडिशा को प्राचीन काल में उत्कल, त्रिकालिंग दक्षिण कौशल, कर्गोंद, तोशाली तथा कालिंग आदि नामों से जाना जाता था। ओडिशा को उत्कल इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह उत्कृष्ट कलाओं और कलाकारों से भरा हुआ राज्य है। ओडिशा राज्य की स्थापना 2 अप्रैल 1936 को हुई थी। यह भारत के पूर्वी हिस्से में बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित है। यह राज्य सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपदाओं से भरपूर है। इस राज्य की अद्वितीय वास्तुकला, ऐतिहासिक धरोहरें, धार्मिक महत्व और प्राकृतिक सुंदरता देश-विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करती है। ओडिशा के प्रमुख पर्यटन निम्नलिखित हैं :-

1. पुरी (जगन्नाथ मंदिर)

पुरी ओडिशा का सबसे प्रसिद्ध धार्मिक और पर्यटन स्थल है। यह स्थल चार धामों में से एक धाम है। यह स्थान भगवान जगन्नाथ के मंदिर के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इस मंदिर के निर्माता गंगा वंशी सम्राट चोडगंग देव हैं। इस मंदिर के रत्नवेदी पर सात भगवान को पूजा जाता है। वे हैं- जगन्नाथ, सुभद्रा, बालभद्र, श्रीदेवी, भूदेवी, माधवा

प्रभु जगन्नाथ के द्वादश यात्रा होते हैं लेकिन अपने भक्तों को दर्शन देने के लिए प्रभु सिर्फ दो ही यात्रा के लिए मंदिर से बाहर आते हैं। वह दो यात्रा है- रथ यात्रा और स्नान यात्रा। भगवान को प्रतिदिन छप्पन भोग लगाया जाता है। इस भोग को पहले मां विमला को अर्पित किया जाता है। उसके बाद इस भोग को महाप्रसाद कहा जाता है।

हर साल लाखों श्रद्धालु रथ यात्रा के दौरान यहाँ आते हैं। यह मंदिर न केवल धार्मिक महत्व का केंद्र है, बल्कि अपनी वास्तुकला और समृद्ध इतिहास के लिए भी जाना जाता है। इसके अलावा पुरी का समुद्र तट पर्यटकों को प्राकृतिक सुंदरता और सुकून प्रदान करता है।

2. कोणार्क सूर्य मंदिर

कोणार्क का सूर्य मंदिर जिसे “ब्लैक पैगोडा” भी कहा जाता है, जो कि भारतीय वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण है। यह मंदिर 13वीं शताब्दी में गंग वंश के राजा नरसिंह देव द्वारा बनवाया गया था। यह मंदिर एक रथ के आकार में निर्मित है, जिसमें सूर्य देवता को समर्पित 24 विशाल पहिए और सात घोड़े हैं। यह स्थल यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है और पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है। यह मंदिर चंद्रभागा नदी के किनारे में स्थित है।

3. चिलिका झील

चिलिका झील एशिया का सबसे बड़ी खारे पानी की झील है। यह झील समुद्र तट के करीब स्थित है और यहाँ प्रवासी पक्षियों के बड़े समूह देखने को मिलते हैं। पर्यटक यहाँ नौका विहार का आनंद ले सकते हैं और पक्षी

प्रेमी यहाँ फ्लेमिंगो स्टॉक और अन्य दुर्लभ पक्षियों को देख सकते हैं। सर्दियों के दौरान यह स्थान प्रवासी पक्षियों से भर जाता है, जो इसे एक शानदार प्राकृतिक स्थल बनाता है।

4. भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान

ओडिशा का भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान एक अद्वितीय पर्यावरणीय क्षेत्र है। यह स्थान दुर्लभ प्रजातियों के जीव जंतुओं और पक्षियों के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र विशेष रूप से मगरमच्छों, कछुओं और प्रवासी पक्षियों का निवास है। यह उद्यान जंगल सफारी और प्रकृति प्रेमियों के लिए एक उत्कृष्ट स्थल है।

5. लिंगराज मंदिर(भुवनेश्वर)

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर, “मंदिरों के शहर” के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ स्थित लिंगराज मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और इसकी वास्तु कला अत्यंत भव्य है। यह मंदिर 11वीं शताब्दी में बनाया गया था और यहाँ प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में भक्त आते हैं।

6. उदयगिरि और खंडगिरि की गुफाएँ

उदयगिरि और खंडगिरि की गुफाएँ प्राचीन जैन धर्म के अनुयायियों द्वारा बनाई गई थीं। ये गुफाएँ न केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं बल्कि उनकी वास्तुकला भी आकर्षक है। गुफाओं में की गई नक्काशी और शिलालेख ओडिशा के प्राचीन इतिहास और संस्कृति को दर्शाते हैं।

7. गोपालपुर समुद्र तट

गोपालपुर एक शांत और सुंदर समुद्र तट है, जो शांति और सुकून की तलाश में आने वाले पर्यटकों के लिए आदर्श स्थान है। यहाँ का नीला पानी, सुनहरी रेत और ठंडी हवाएं पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। गोपालपुर एक प्रमुख बंदरगाह भी है और यहाँ का स्थानीय बाजार, सीपों और समुद्री स्मृति चिन्हों के लिए प्रसिद्ध है।

8. सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान

सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान ओडिशा का सबसे बड़ा वन्य जीव अभ्यारण है। यह उद्यान अपनी हरी-भरी घाटियों, झरनों और विविध जीव जंतुओं के लिए जाना जाता है। यहाँ बाघ, हाथी और दुर्लभ औषधीय पौधों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

9. धौली गिरी

धौलीगिरी, अशोक के काल से जुड़ा एक ऐतिहासिक स्थल है। यह वह स्थान है जहाँ सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद बौद्ध धर्म अपनाया था। यहाँ स्थित शांति स्तूप पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है।

10. हीराकुद बांध

महानदी पर स्थित हीराकुद बांध भारत का सबसे लंबा बांध है। यह बांध न केवल ओडिशा के जल संसाधनों का प्रमुख स्रोत है बल्कि यह सुंदर पर्यटक स्थल भी है। यहाँ से सूर्यास्त और सूर्योदय के अद्भुत दृश्य देखे जा सकते हैं।

ओडिशा अपने प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक स्थलों, धार्मिक महत्व और समृद्ध संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ का पर्यटन स्थल न केवल इतिहास और कला के प्रेमियों के लिए बल्कि प्रकृति प्रेमियों के लिए और रोमांच के शौकीनों के लिए भी आदर्श है। ओडिशा की यात्रा न केवल आत्मा को शांति देती है बल्कि भारतीय इतिहास और संस्कृति की गहराइयों को समझने का एक अवसर भी प्रदान करती है।



सिटी ऑफ जॉय

सुश्री श्रद्धा राऊत

सुपुत्री:- श्री पूर्णचंद्र राऊत , लेखापरीक्षक

कोलकाता, "सिटी ऑफ जॉय", इतिहास और संस्कृति का जीवित चित्र है। इस आकर्षक नगर की मेरी हाल में ही एक रोमांचक यात्रा थी, जिसमें औपनिवेशिक युग की भव्यता और प्राचीन परंपराओं का सहज मिश्रण था।

मेरी यात्रा प्रतिष्ठित विक्टोरिया मेमोरियल से शुरू हुई, जो एक शानदार सफेद संगमरमर की इमारत है, जो भारत के शाही और राजघराने वाले अतीत की याद दिलाती है। जब मैं इसके विशाल उद्यानों में घूम रही थी, न जाने कैसे मगर मैं ब्रिटिश राज के दिनों में वापस चली गई और यह कल्पना कर रही थी कि कैसे एक तरफ रानी विक्टोरिया यहाँ की शान व शोभा बढ़ाती होंगी और दूसरी तरफ कैसे हमारे ही भारतीय भाइयों को अत्याचार से पीड़ित करके, इस इमारत को खड़ा करने के लिए मजबूर किया गया होगा। स्मारक का विशाल आकार और वास्तुकला की चमक ने मुझे विस्मय में डाल दिया, जो शहर की समृद्ध विरासत का एक प्रमाण है।

अगले दिन मेरी एक प्रतियोगिता थी, जो कि कोलकाता आने की असली वजह थी। यह एक विशाल "अबाकस प्रतियोगिता" थी जो दुनिया के कुल ग्यारह देशों के बीच आयोजित की गयी थी। जबकि प्रतियोगिता सुबह थी, फिर भी इसमें हमारा पूरा दिन लग गया क्योंकि इसका परिणाम शाम को आने वाला था। इस प्रतियोगिता में मुझे तृतीय स्थान प्राप्त हुआ, मगर मुझे प्रसन्नता नहीं हुई क्योंकि मेरी आशा और ज्यादा थी। यह विशाल प्रतियोगिता, "विश्व बंगला मेला प्रांगण" में आयोजित हुई थी।

तृतीय या आखिरी दिन मैं दक्षिणेश्वर काली मंदिर की आध्यात्मिक यात्रा पर निकल गई, जो देवी काली को समर्पित एक पूजनीय हिंदू तीर्थ स्थल है। हुगली नदी तट पर स्थित यह मंदिर शांति और भक्ति की आभा बिखेरता है। जैसे ही मैंने मंदिर परिसर में प्रवेश किया, मैं तुरंत जटिल नक्काशी और हवा में व्याप्त श्रद्धा की भावना से प्रभावित हो गई। मुख्य देवी, दक्षिणेश्वर काली, एक सुंदर ढंग से सुसज्जित गर्भगृह में विराजमान हैं और वातावरण भजनों के जाप और घंटियों की आवाज से भरा हुआ है। मैं भी देवी का आशीर्वाद लेने आए भक्तों की भीड़ में शामिल हो गई और मुझे शांति और सुकून का एहसास हुआ। दक्षिणेश्वर काली मंदिर सिर्फ पूजा-अर्चना का स्थान नहीं है बल्कि यह आस्था और परंपरा की स्थायी शक्ति का जीवंत प्रमाण भी है। जब मैं मंदिर परिसर में घूम रही थी तो मैंने अनुष्ठानों और समारोहों के प्रति भक्तों की आँखों में भक्ति और समुदाय की भावना को देखा, जो उन्हें एक साथ बांधती है।

'विक्टोरिया मेमोरियल' से 'विश्व बंगला मेला प्रांगण' और यहाँ से दक्षिणेश्वर काली मंदिर तक मेरी यात्रा कोलकाता शहर का ही एक छोटा सा रूप था, जहाँ औपनिवेशिक युग की भव्यता, भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता की जीवंतता के साथ सहज रूप से घुलमिल गई और जो मेरे जीवन का एक अनूठा और अविस्मरणीय अनुभव बन गया।



चाँद तारे गवाह आज भी

श्री नवीन कुमार चौबे

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

रोशनी साथ छोड़ जाने को थी,
कुछ ही देर में रात होने को थी
धुंध चढ़ना जो शुरू हुआ
किसी की धड़कनें तेज कर गया।
वो धड़कता दिल किसी नन्हें का था,
जिसे फिर एक रात ठिठुर कर बितानी थी।

वो रात इतनी अंधेरी थी कि,
चाँदनी की रोशनी भी फीकी पड़ी।
दिन भर कुछ कमाई हुई नहीं,
ना रोटी भीख में मिली किसी से।
जिस ठिकाने पर रात बितानी थी,
वहाँ आज कुत्तों की बारी है।

वो नन्हें-नन्हें हाथ पैर
खुद में समेट बैठ गया।
सिर दीवार से टिकाये हुए,
आसमाँ को निहार रहा।
आँखों से निकलते हर आंसू
ठंड कम होने की उम्मीद लगाये हैं।

सोचा था बीत जाये रात यूँ ही,
पर होना था इस बार कुछ और ही।
पाँच साल पुरानी ये दास्ताँ,
आज अंत का चौखट लांघ गई।
वो आँखें इस बार जो बंद हुई,
आलस में, फिर खुली ही नहीं।

उस मौत की गवाही को
चाँद-तारे भी मौजूद थे।
शायद खुदा इंसानों के मिजाज में नहीं
इसलिये गवाही नामंजूर की।
ठंड आज भी लाशों बिछा रही,
चाँद तारे गवाह आज भी।



कश्मीर यात्रा

सुश्री सागरिका साहू

सुपुत्री :- श्री गणेश्वर साहू, लेखापरीक्षक

यात्रा, जीवन का एक ऐसा अनुभव है, जो हमारे मन, मस्तिष्क और आत्मा को नई ऊर्जा और प्रेरणा प्रदान करता है। यह केवल स्थानों का भ्रमण नहीं, बल्कि हमारे भीतर छिपे अन्वेषण की भावना को जागृत करने का माध्यम है। यात्रा हमें न केवल नई जगहों से परिचित कराती है, बल्कि वहाँ की संस्कृति, रीति-रिवाज और जनजीवन के विविध पहलुओं को समझने का अवसर भी देती है। यात्रा वृत्तांत लिखना इन अनुभवों को सहेजने और दूसरों के साथ साझा करने का एक सशक्त माध्यम है। यह शब्दों के माध्यम से हमारे अनुभवों, भावनाओं और उन अनमोल क्षणों को जीवंत बनाता है, जो हमने यात्रा के दौरान महसूस किए होते हैं।

यात्रा वृत्तांत किसी विशेष स्थान का मात्र विवरण नहीं होता, बल्कि उसमें लेखक का व्यक्तिगत दृष्टिकोण, भावनाएँ और यात्रा के दौरान की गई खोज भी सम्मिलित होती है। जब कोई व्यक्ति यात्रा पर निकलता है तो वह अपने साथ एक खुला मन और जिज्ञासा लेकर चलता है। हर नई जगह, वहाँ के लोग, उनका रहन-सहन और वहाँ को प्रकृति हमें जीवन के अलग-अलग रंगों से परिचित कराती है। इन अनुभवों को लेखनी के माध्यम से व्यक्त करना न केवल एक कला है, बल्कि यह पाठकों को भी उस यात्रा का सहभागी बना देती है।

एक यात्रा का वृत्तांत जो मेरे हृदय के करीब है, वह मेरी कश्मीर यात्रा का है। कश्मीर, जिसे धरती का स्वर्ग कहा जाता है, अपने प्राकृतिक सौंदर्य, शांत झीलों, ऊँचे पहाड़ों और चारों ओर बर्फ से ढँके नजारों के लिए प्रसिद्ध है। जब मैंने इस यात्रा की योजना बनाई तो मन में एक अजीब सा उत्साह था। श्रीनगर पहुंचने के बाद, डल झील का दृश्य मन को मोह लेने वाला था। पानी में तैरते शिकारे और चारों ओर फैली हरियाली ने ऐसा प्रतीत कराया मानो मैं किसी स्वप्नलोक में आ गई हूँ।

डल झील में शिकारे की सवारी के दौरान वहाँ के स्थानीय लोगों से बातचीत करने का मौका मिला। उनकी सरलता और मेहमाननवाजी ने मुझे बेहद प्रभावित किया। वहाँ के लोग, अपनी कठिनाइयों के बावजूद, जीवन के प्रति बेहद सकारात्मक और खुशमिजाज थे। डल झील के किनारे बैठे-बैठे मैंने शाम का सूरज डूबते हुए देखा। वह क्षण इतना अद्वितीय था कि आज भी मेरी स्मृतियों में ताजा है। उसके बाद गुलमर्ग और पहलगाम की यात्रा का अनुभव और भी अद्भुत था। गुलमर्ग की हरी-भरी घाटियाँ और पहलगाम की शांत वादियाँ मन को सुकून प्रदान करती हैं।

यात्रा के दौरान केवल सुंदर नजारे ही नहीं, बल्कि वहाँ की सांस्कृतिक विविधता भी हमारी जिज्ञासा को बढ़ाती है। कश्मीर में मैंने वहाँ की पारंपरिक वेशभूषा, खाने-पीने की चीजें और लोकगीतों को करीब से देखा। कश्मीरी वजवान का स्वाद और कहवा की चुस्की आज भी मेरे जेहन में बसी हुई है। वहाँ के स्थानीय बाजारों में हाथ से बनी पश्मीना शॉल और लकड़ी के नक्काशीदार सामान खरीदते हुए मुझे ऐसा महसूस हुआ मानो मैं उस संस्कृति का हिस्सा बन गई हूँ।

यात्रा वृत्तांत का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसमें यात्रा के दौरान आने वाली कठिनाइयों और चुनौतियों का वर्णन भी शामिल होता है। मेरी कश्मीर यात्रा के दौरान एक घटना ऐसी थी, जिसने मुझे यह सिखाया कि कठिन परिस्थितियाँ भी हमारे अनुभवों को समृद्ध बनाती हैं। गुलमर्ग की यात्रा के दौरान अचानक मौसम खराब हो गया। चारों ओर बर्फबारी शुरू हो गई और रास्ते बंद हो गए। कुछ समय के लिए घबराहट हुई लेकिन स्थानीय गाइड और वहाँ के लोगों की मदद से हम सुरक्षित वापस लौट सके। यह अनुभव मुझे सिखा गया कि यात्रा में धैर्य और संयम कितना आवश्यक है।

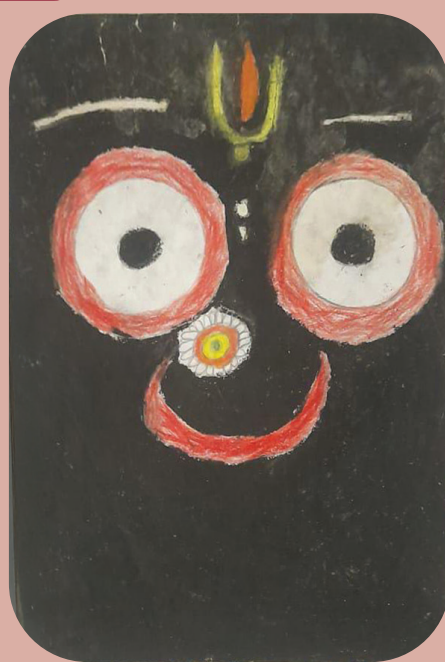
यात्रा के दौरान प्राप्त होने वाले अनुभव हमें न केवल बाहरी दुनिया से परिचित कराते हैं, बल्कि हमारे भीतर एक आंतरिक यात्रा भी शुरू करते हैं। यात्रा करते समय हम अपनी सीमाओं को पहचानते हैं, अपने डर का सामना करते हैं और अपनी क्षमताओं को बढ़ाते हैं। मेरी कश्मीर यात्रा ने मुझे सिखाया कि जीवन में खुशियाँ केवल भौतिक सुख-सुविधाओं में नहीं, बल्कि अनुभवों और स्मृतियों में छिपी होती हैं।

यात्रा वृत्तांत के माध्यम से हम अपनी यात्रा के पलों को शब्दों में बाँध सकते हैं। यह न केवल हमारे अनुभवों को दूसरों के साथ साझा करने का एक तरीका है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि हमने अपनी यात्रा में क्या सीखा। हर यात्रा हमें कुछ नया सिखाती है और हमारे व्यक्तित्व को निखारती है। कश्मीर यात्रा ने मुझे प्रकृति के प्रति और अधिक संवेदनशील और कृतज्ञ बना दिया है। वहाँ की सुंदरता ने मुझे यह सिखाया कि जीवन की असली खुशी सादगी में है।

यात्रा वृत्तांत केवल एक लेखन शैली नहीं है, बल्कि यह जीवन को समझने का एक माध्यम है। यह हमें प्रेरित करता है कि हम अपनी दिनचर्या से बाहर निकलें, नई जगहों पर जाएँ, नए अनुभवों को अपनाएँ और अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाएँ। यात्रा हमें सिखाती है कि दुनिया कितनी बड़ी और सुंदर है, और हमें अपनी सीमाओं से बाहर निकलकर इसका आनंद लेना चाहिए।

-*-*-*

चित्रकला



श्री आरव कुमार बेहेरा, कक्षा : 2 , सुपुत्र : श्री कृष्ण चंद्र बेहेरा, लिपिक



राजस्थान: शाहीपन की प्रतिध्वनि

श्री बी. रामचंद्र राव

वरि. लेखापरीक्षक

भारत का मुकुट रत्न राजस्थान, इतिहास, संस्कृति, आध्यात्मिक और अद्भुत दृश्यों का एक मंत्रमुग्ध करने वाला मिश्रण है। जयपुर के राजसी महलों से लेकर उदयपुर के मन मोह लेने वाली झीलों तक, इस राज्य का हर कोना वीरता और भव्यता की कहानी बताता है।

मेरी यात्रा गुलाबी शहर जयपुर से शुरू हुई, जहाँ शानदार हवा महल और भव्य सिटी पैलेस ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। आमेर किले की यात्रा, इसकी जटिल नक्काशी और भव्य प्रांगणों के साथ, समय में पीछे जाने जैसा महसूस हुआ। जीवंत वस्त्रों और हस्तनिर्मित आभूषणों से भरे जयपुर के चहल-पहल भरे बाज़ार खरीदारी करने वालों के लिए स्वर्ग था। इस यात्रा के दौरान, मेरे जीवन की एक यादगार घटना घटी — मेरे बेटे को चिकन बिरयानी बहुत ही प्रिय है, परंतु क्या करें, राजस्थान में मांसाहारी लोगों की संख्या ही बहुत कम है जिसके कारण मांस भी गिने-चुने रेस्टोरेंट्स में मिलता है? अब जैसा मेरा नसीब, उसने ज़िद ही पकड़ ली कि “डैडी, मैं तो अब चिकन ही खाऊंगा।” दस रेस्टोरेंट्स में खोजने के बाद एक रेस्टोरेंट में उसका प्रिय चिकन मिला। उसके बाद बड़े ही तृप्ति के साथ खाना खत्म करने के बाद उसने मुझसे कहा, “डैडी, अब हम घूमने जा सकते हैं”।

इसके बाद मैं जोधपुर, नीले शहर की ओर चल पड़ा, जहाँ भव्य मेहरानगढ़ किला छाया हुआ है। किले से मनोरम दृश्य लुभावने थे और संकरी गलियों में टहलना अपने आप में एक अनुभव था। थोड़ी दूर पर जैसलमेर अपनी सुनहरी बलुआ पत्थर की वास्तुकला के साथ हमारा इंतजार कर रहा था। ऊँट सफ़ारी का आनंद लेते हुए बालू या रेत पर सूर्यास्त और चंद्रमा देखना एक जादुई अनुभव था।

झीलों का शहर उदयपुर मेरा अगला पड़ाव था। पिछोला झील की शांत सुंदरता, इसके पानी पर राजसी सिटी पैलेस की झलक, एक तस्वीर-परफ़ेक्ट सेटिंग के लिए बनाई गई थी। जग मंदिर तक नाव की सवारी ने यात्रा में रोमांच को बढ़ा दिया।

राजस्थान की मेहमाननवाज़ी, समृद्ध संस्कृति और शाही विरासत ने मेरे दिल पर एक अमिट छाप छोड़ी। चाहे वह पुष्कर का लोक संगीत हो, शेखावाटी के शानदार भित्तिचित्र हों या दाल बाटी चूरमा का लजीज स्वाद, राजस्थान में हर पल एक रोमांच है। अगर आप इतिहास, रोमांच और राजसीपन की तलाश में हैं, तो राजस्थान ज़रूर जाएँ!



ओडिशा- संस्कृति एवं कला का अनूठा संगम

श्री आयुष्मान पंडा

पुत्र- श्री दिगंबर पंडा, लेखापरीक्षक

ओडिशा की संस्कृति भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न अंग है, जो अपनी प्राचीन परंपराओं, अद्वितीय कला और स्थापत्य कौशल के लिए विख्यात है। इस राज्य की सांस्कृतिक पहचान इसके भव्य मंदिरों, शास्त्रीय नृत्य और पारंपरिक कलाओं में सन्निहित है। पुरी का जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर और भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर न केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं, बल्कि स्थापत्य की उत्कृष्टता के अद्वितीय उदाहरण हैं।



ओडिशा का ओडिशी नृत्य, जो भारतीय शास्त्रीय नृत्य के प्राचीनतम रूपों में से एक है, अपनी लयबद्धता, सौंदर्य और आध्यात्मिकता के लिए अद्वितीय है। यह नृत्य रूप न केवल धार्मिक कथाओं को जीवंत करता है, बल्कि भारतीय संस्कृति की गहराई और परिष्कार को दर्शाता है। इसी तरह ओडिशी संगीत भी शास्त्रीय परंपरा का उत्कृष्ट परिचायक है।

यहाँ की हस्तकला, जैसे पट्टचित्र, पथचित्र और रत्नशिल्प सृजनात्मकता और परिश्रम का अद्वितीय संगम है। इसके अतिरिक्त ओडिशा का पारंपरिक भोजन, विशेष रूप से चावल, दाल, मछली और रसगुल्ला जैसी मिठाई राज्य की समृद्ध पाक कला का प्रतीक हैं।

ओडिशा की संस्कृति अपनी ऐतिहासिक गरिमा, धार्मिक महत्व और कलात्मक विशिष्टता के कारण एक बेजोड़ धरोहर है, जो देश-विदेश के पर्यटकों को मोहित करती है।



पत्नी

श्री बिक्रम महापात्र

वरि. लेखापरीक्षक

पत्नी किसे कहते हैं! पतन से दूर करने वाली को... हाँ भाई आपने ठीक सुना। आपको मेरी कसम... क्या आप पत्नी पीड़ित है? अगर हां, तो मैं कहूंगा कि आप बहुत भाग्यवान हैं। और अगर आपकी पत्नी सरस शांत स्वभाव की हैं तो फिर मुश्किल है। फिर तो आपसे कुछ भी नहीं होगा। मैं ऐसे ही नहीं बोल रहा हूँ। कुछ व्यवहारिक तथ्यों के आधार पर बोल रहा हूँ।

कहावत है पतन से पार करने वाली को पत्नी कहते हैं। चलिए उदाहरण के द्वारा हम आपको समझाते हैं। आप बाजार से भाजी लेकर घर गए और उसमें एक-आध खराब हो और आपकी पत्नी शांत, सरल है तो आपको कुछ बोलेगी नहीं। आपको पता भी नहीं चलेगा कि अच्छी सब्जी है या खराब। सोचिए अगर भाजी देखकर आपकी पत्नी आपके आते ही आपके ऊपर बरस जाए... भाजी देखकर नहीं लाते...? चार बार देखो... पैसा देकर लाते हो या फ्री में....? तो सोचिए, क्या अगली बार आप गलती करेंगे? आप चार बार क्या, आठ बार सब्जी घुमा-घुमा कर चेक करेंगे। देखेंगे कि यह देशी भाजी है या चलानी। हुआ ना आपका अनुभव... अगर सरल पत्नी होती तो क्या आप ऐसा अनुभव प्राप्त कर सकते?

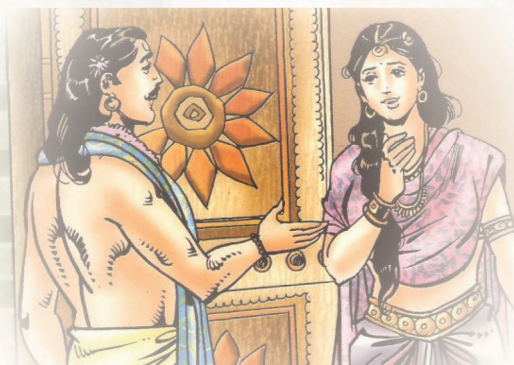


आपके घर पर पधारते-पधारते यदि आपकी पत्नी हँसकर स्वागत करके आपको स्वादिष्ट भोजन खिलाए तो आप खुश हो जाएंगे, सोचेंगे कि मैं कितना भाग्यशाली हूँ कि ऐसी पत्नी मिली है। जो स्वादिष्ट खाना पेट के अंदर ठूँसे होंगे उससे पेट और कमर में चर्बी जमेगी। जितनी खुशी से खाए होंगे, उतने ही दुख से डॉक्टर को पैसा देंगे। कड़वी दवाइयाँ सेवन करेंगे और सुबह की खूबसूरत नींद के बंधन से मुक्त होकर चलने के लिए उठ जाएंगे। पसीना-पसीना हो जाएंगे उस अर्जित चर्बी को पिघलाने के लिए। लेकिन अगर आपके आते-आते पत्नी चार बातें सुनाए, आलू फ्राई खाने को दिल करे तो करेला फ्राई दे, तो आप मुंह को विकृत कर जैसे-तैसे खाकर उठ जाएंगे। अब खाने के प्रति आपकी यह वितृष्णा क्या आपकी चर्बी बढ़ा सकेगी?

कहावत है- 'आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।' पत्नी अगर उग्रचंडी हो तो आप खुश रहने के लिए टीवी देखोगे, संगीत में डूब जाओगे, चित्रकारी में टाइम पास करोगे, जो कि भविष्य में आपको महान संगीतज्ञ,

लेखक, चित्रकार या अभिनेता बना सकता है। आप साधारण आदमियों के बीच में असाधारण हो जाओगे। उतना ही नहीं पत्नी की वजह से चलते-फिरते अतिथि आपके घर पर आने से भी डरेंगे। और बच्चे भी उनका मूड देखकर काम करेंगे। परंतु आपकी पत्नी अगर सुशील हो तो आप उनका पल्लू पकड़कर घूमते रहोगे। उनके प्रेम में डुबकी लगाकर सारा समय बर्बाद करोगे। ऐसे में आपकी उन्नति भगवान चाहे भी तो नहीं कर पाएंगे।

पुराने आदमी कह गए हैं- 'हर एक सफल व्यक्ति के पीछे एक महिला का हाथ होता है।' अगर पत्नी आपको पूरा भोजन, प्यार देकर सुला देगी तो आप सफलता तो छोड़ो, उसके रास्ते तक भी पहुंच नहीं पाएंगे। आपने तो पढ़ा होगा महाकवि कालिदास की कथा। पत्नी की गाली सुनकर महामूर्ख कालिदास कैसे 'महाकवि कालिदास' बन गए। और तुलसीदास जी की कथा... जब मंदिर गए थे तो कोई जरूरी खबर पाकर पत्नी रत्नावली मायके चली गई। तुलसीदास जी को जब घर पर आकर पत्नी के मायके जाने की खबर मिली तो वे बारिश, तूफान और बाढ़ की परवाह किए बिना अपने ससुराल में पहुंच गए। वहां उनकी पत्नी गुस्सा करके बोली, “ आप जिस हड्डी मांस भरे शरीर के लिए दौड़कर आए हैं, इससे थोड़े-से प्रेम से अगर भगवान को याद कर लेते तो आपका उद्धार हो जाता।” बस पत्नी की यह बात चुभ गई और बदल गया तुलसीदास जी का जीवन। अगर पत्नी सीधी-साधी होती तो... पति उनके मायके में उनके पीछे-पीछे आए हैं सोच के कृतज्ञ हो जाती। फिर ना तुलसीदास संत बनते ना रामचरितमानस और हनुमान चालीसा लिखा जाता।



ऐसे-ऐसे उदाहरण हमारे चारों तरफ घूम रहे हैं, बस केवल आँखें खोलकर देखने की जरूरत है। और कुछ पुरुष पत्नी की ऐसी कटाक्ष से आत्महत्या तक कर लेते हैं। उनके जैसा मूर्ख शायद कोई नहीं है। हां, हमारे देश में ऐसा बहुत हुआ है। ऐसे महामूर्खों को स्वर्ग, नरक, पाताल में भी जगह नहीं मिलेगी। अरे भाई, खुद के जीवन को सुंदर बनाने का ऐसा मौका कोई छोड़ता है क्या! अरे भाई जला-जला कर ही सोने के दाम बढ़ते हैं, यह अच्छा रहस्य आपके समझ में आए तब ना। जाओ, नहीं नहीं, जाओ... पुरुष कमीशन बनाओ, पत्नी पीड़ित संघ बनाओ और खुद के पैर में खुद ही कुल्हाड़ी मारो... हमारा क्या जाता है।

आप विश्वास करें या ना करें आज भी जितने सफल पुरुषों को देख रहे हैं उनके पीछे ऐसी-ऐसी उग्रचंडी का ही हाथ है। अवश्य आदमी स्वीकार करने में अपनी पत्नी की अनुमति लेना चाहेंगे। हां और एक बात आप बोल सकते हैं, ऐसे बहुत सारे पुरुष हैं जो बिना शादी के भी सफल हैं। आपको इसके बारे में भी अंदर की बात बताऊंगा पर आप आँख छूकर बोलिए कि यह बात एक कान से दो कान नहीं होना चाहिए। बात ऐसी है कि उनकी प्रेमिकाओं ने इनको ऐसा मजा सिखाया कि सारी नारी जाति पर से उनका विश्वास उठ गया। बस चल दिए अपना जीवन देश के नाम करने।

भाई आपको झूठ लगे या सच, इतने सालों के अनुभव से कह सकता हूँ कि सफलता का दूसरा नाम नारी है। नारी के बिना सफलता हासिल करना नामुमकिन है। आप दिखाकर रोएँ या छुपाकर... सफल व्यक्ति चुप रहके जितने भी पुरस्कार लाते हैं, उन सबके पीछे एक उग्रचंडी पत्नी का ही हाथ है, इसमें कोई दो मत नहीं है।

आज का यह लेख चाहता हूँ कि आपकी धर्मपत्नी के हाथ न पड़े, नहीं तो सर पर बचे-खुचे बालों की जो हालत होगी, उसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं रहूंगा।



आज कल के बच्चे

श्रीमती बिजयलक्ष्मी तांती

पत्नी- श्री गोबिन्द दीप, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आज कल के बच्चे...

सुनते कम हैं, करते कम,
माता पिता पर ये करते कैसा जुल्म !

आज कल के बच्चे...

जब भी बोलो पढ़ने जाओ
उसपर भी पढ़ने की एक सीमा बताओ,
थोड़ी देर पढ़ते और बोलते
मम्मी, हमारी एनर्जी हो गयी खतम !
आज कल के बच्चे...

हफ्ते भर वो ट्यूशन, योगा और डांस क्लास जाते,
घर पर पढ़ने को कहो तो मुंह हैं बनाते,
कहते हफ्ते भर तो पढ़ते-लिखते हैं हम
हम पर मम्मी थोड़ा करो रहम ।

आज कल के बच्चे...

दिन भर मोबाइल चलाकर बोर नहीं होते,
कार्टून देखते और गेम चलाते,
खेलते-खेलते जरा सा पढ़ते,
और फिर हमें ये बोलते,
सब पढ़ लेंगे हम, जब ये गेम होगा खतम !
आज कल के बच्चे, सुनते कम, करते कम ।



अरडी में बाबा अखंडलमणि मंदिर

श्री रामचंद्र बेहेरा

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

“ईश्वर सर्वव्यापी है” - एक स्वाभाविक विश्वास जिसे हममें से अधिकांश लोग कभी न कभी या हर पल महसूस करते हैं। यह हमारी मानसिकता पर निर्भर करता है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे कि खुशी, दुख, कठिनाइयों, समस्याओं, बाधाओं, घटनाओं या गतिविधियों की आड़ में जीवन में सामना किए जाने वाले उत्साह और परिवार में पालन किए जाने वाले पारंपरिक मूल्यों का अनुभव कराता है। भारत में लिंगम की पूजा बहुत प्राचीन है। हम भारत में कई मंदिर हैं जहाँ भगवान शिव की पूजा लिंग के रूप में की जाती है। या तो यह प्राकृतिक रूप से बना है या बनाया गया है। गुजरात में सोमनाथ मंदिर, श्रीनगर में शंकराचार्य मंदिर, पहलगँव में अमरनाथ तीर्थस्थल और जम्मू में महाबलीश्वर मंदिर भारत के कुछ प्रसिद्ध शिव मंदिर हैं।

ओडिशा में भी प्राचीन काल से इसी तरह की पूजा की जाती रही है। कुछ प्राचीन शिव मंदिर हैं भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर, कटक में धबलेश्वर, नीलगिरि में पंचुलिंगेश्वर, जलेश्वर में चंदनेश्वर और भद्रक में अरदीश्वर। शैव धर्म की प्राचीन महिमा और अखंडमनी के चमत्कार व्यापक रूप से जाने जाते हैं और पूजे जाते हैं। भगवान अखंडलमणि, कई लोगों के लिए, केवल एक देवता नहीं हैं, बल्कि उनके दैनिक जीवन का अभिन्न अंग हैं, जो उनके साथ रहते हैं और जब भी वे मुसीबत में होते हैं, तो उन्हें बचाते हैं। कहावत है 'अरदी रे गेदी नहीं'। अरडी में कोई काला जादू नहीं है, यह इस बात का प्रमाण है कि बाबामणि हर किसी की प्रार्थना सुनते हैं और मनुष्यों के सभी कष्टों को ठीक करते हैं।

अरडी भारत के पूर्वी भाग में शैव धर्म का एक प्रमुख तीर्थस्थल है। यहाँ भगवान की पूजा शिव लिंगम के रूप में की जाती है। यह मेघासन की पवित्र बेटी 'सलंदी नदी' और गोनासिका की बेटी 'बैतरणी नदी' के दोनों तरफ फैला हुआ है। यह मिलन स्थल है जिसका उल्लेख प्रसिद्ध ओडिया कवि राधानाथ रे ने कविता 'उषा' में किया है। यह कविता वर्ष 1888 में लिखी गई थी। इसका मतलब है कि अरडी 1888 से पहले ओडिशा में प्रसिद्ध था। यह भद्रक शहर से 37 किमी दूर और चंदबली (ओडिशा का एक प्राचीन बंदरगाह) से 12 किमी दूर है। यह पूरे साल सड़क और नदी मार्गों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। स्थानीय लोगों के अनुसार बाबामणि के पवित्र स्थान को अरडी, अखंडलामणि पीठ और तलाघाटी ठाकुर जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। यह एक ऐतिहासिक स्थान

है और भगवान का आगमन काफी अस्पष्ट और रहस्यमय है। मणि बाबा के चमत्कारों पर लोगों में एक मजबूत विश्वास है। ऐसा माना जाता है कि अगर कोई व्यक्ति पूरी लगन और श्रद्धा से बाबा के सामने कुछ भी चाहता है, तो वह पूरी होती है। कभी-कभी भयंकर बीमारियों से ग्रस्त लोग भगवान के सामने पूरी तरह से आत्मसमर्पण करने से ठीक हो जाते हैं। यह कई घटनाओं में सिद्ध हुआ है। कई लोगों ने कुंडजल (मंदिर के परिसर में स्थित पवित्र तालाब का पानी) लेने से सांप के काटने से खुद को ठीक किया है। भगवान अखंडलामणि से संबंधित चमत्कार और अन्य आश्चर्यजनक कहानियों का वर्णन देबा दास और दशरथी दास द्वारा प्रसिद्ध पुस्तक "पंचानन मेला" में किया गया है। यह एक मेला या पूजा है जो किसी भक्त द्वारा उसकी इच्छा पूरी होने पर की जाती है। यह पूरे राज्य में मनाया जाता है और इस पवित्र पुस्तक को राज्य के लगभग हर घर में सम्मान के साथ रखा जाता है।

ओडिशा के भद्रक जिले में स्थित अखंडलामणि मंदिर की यात्रा के दौरान आध्यात्मिक मनःस्थिति में होने का अवसर मिला। बैतरणी नदी के तट पर अखंडलामणि मंदिर अरडी में भगवान शिव का निवास है, जो भद्रक के जिला मुख्यालय से धुसुरी के माध्यम से सड़क मार्ग से पूर्व की ओर 37 किमी दूर है और यात्रा के दौरान एक गाँव और कृषि भूमि होने के कारण चिकनी सड़क से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। यह स्थान बैतरणी नदी के माध्यम से नाव द्वारा चंदबली से भी जुड़ा हुआ है। चंदबली फेरी घाट से अरडी तक नाव से मुश्किल से दो घंटे लगेंगे।

इतिहास

इस जगह का मुख्य आकर्षण इसका पौराणिक इतिहास है जिसके लिए यह भद्रक के पर्यटन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बाबा अखंडलामणि या भगवान शिव के मंदिर के बारे में कोई निर्णायक इतिहास उपलब्ध नहीं है। किंवदंती के अनुसार, लगभग 350 साल पहले राजा श्री नीलाद्रि समर सिंह महापात्र के शासन के दौरान, एक सुबह राजा ने बैतरणी नदी के किनारे अपने धान के खेत में खेती करने के लिए एक किसान को भेजा। खेती करते समय, उसके हल का ब्लेड किसी कठोर पदार्थ से टकराकर टूट गया। किसान हैरान रह गया और उसने खून से लथपथ एक काले चमकीले ग्रेनाइट पत्थर को बैतरणी नदी की ओर बहते हुए देखा। किसान राजा नीलाद्रि समर सिंह को बुलाने के लिए दौड़ा और वह जल्दी से उस स्थान पर आया, जहाँ खून की जगह दूध की बाढ़ आ गई थी और पत्थर पर एक विशाल काला नाग फन डाले हुए था।

उस रात राजा को उस स्थान पर भगवान अखंडलामणि के आगमन के बारे में एक सपना आया। उन्होंने देवता का नाम "अखंडलामणि" रखा, जिसका अर्थ है "अखंड चमक वाला" क्योंकि माना जाता था कि शिवलिंग से दिव्य चमक निकलती है। यह खबर इलाके में जंगल की आग की तरह फैल गई। अगले दिन राजा नीलाद्रि समर सिंह ने महान भगवान की पूजा शुरू कर दी और तुरंत उस स्थान पर एक लकड़ी का मंदिर बनवाया। विभिन्न गांवों से बड़ी संख्या में भक्त भगवान के दर्शन और पूजा करने लगे। अरडी का वर्तमान मुख्य मंदिर कनिका के राजा श्री हरिहर भंजा और उनकी प्रमुख रानी सत्यभामा पटदेई द्वारा बनाया गया था। मंदिर की ऊंचाई लगभग 150 फीट है। इस मंदिर में इस्तेमाल किए गए सभी पत्थर चंडीखोल के पास ललितगिरी की ऐतिहासिक पहाड़ी से लाए गए थे। तब कनिका के राजा श्री हरिहर भंज देव एक गंभीर नेत्र रोग से पीड़ित थे। सभी उपचार विफल हो जाने पर एक दिन उनकी पत्नी रानी सत्यभामा पट्टा महादेई ने अरडी आने का फैसला किया। तब बाबा अखंडलामणि

राजा के सपने में प्रकट हुए और उन्हें उपाय बताया। अन्त में राजा हरिहर भंजदेव उस रोग से ठीक हो गए। राजा ने भगवान अखंडलमणि के लिए एक मुख्य पक्का मंदिर बनवाया। उन्होंने मंदिर के पास शिव गंगा नाम का एक बड़ा तालाब खुदवाया। तालाब बैतरणी नदी से जुड़ा हुआ है। इस मंदिर के बारे में कई लोककथाएँ हैं। अदृश्य शिव और उनके रहस्य के बारे में न्यूनतम और सीमित जानकारी के साथ, कुछ लोगों ने यहाँ बाबा की उपस्थिति को महसूस किया है। यहाँ भगवान शिव को प्रसाद के रूप में दही, दूध, शहद, केला इन सभी को मिलाकर तरल रूप में अर्पित किया जाता है।

शिवरात्रि के दिन देश के कोने-कोने से लाखों लोग महादीप (मिट्टी का बड़ा दीपक) के दर्शन करने के लिए अरडी के पवित्र स्थान पर आते हैं, जिसे मंदिर के ऊपर रखा जाता है। राज्य के अन्य शिव मंदिरों के विपरीत, अरडी में रात के अंतिम प्रहर में महादीप को मंदिर के ऊपर ले जाया जाता है। दिया प्रकाश की शानदार चमक को प्रतिबिंबित करता है जिसे बहुत दूर से देखा जा सकता है। जैसे ही भक्त महादीप को ऊपर की ओर जाते हुए देखते हैं, वे इसका स्वागत हुलाहुली और झांझ और शंख की ध्वनि के साथ करते हैं। इस समय पूरा वातावरण "हरिबोल" और "ओम नमः शिवाय" की ध्वनि से गूंज उठता है। कोई भी उस दिव्य दृश्य का शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता।

भक्त श्रावण के महीने में भगवान की पूजा करने और शिवलिंग पर पवित्र जल चढ़ाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में अरडी आते हैं। बोल बम भक्त भारत की विभिन्न नदियों जैसे गंगा, ब्राम्हणी, बैतरणी, महानदी, सलांडी, खरासरोटा आदि से पवित्र जल बांस के कांवर के साथ लाते हैं।

मंदिर की संरचना उत्कल और द्रविड़ वास्तुकला कला का मिश्रण प्रतीत होती है। जमीन से मंदिर की ऊंचाई 150 फीट है। इसमें एक नटमंदिर (नृत्य का हॉल) और मुखशाला (प्रवेश द्वार) है। मंदिर परिसर में अन्य देवता भी हैं और यह एक बड़े परिसर में दीवार से घिरा हुआ है।

मंदिर के उत्तर की ओर 'पार्वती', पश्चिम में 'कार्तिकेय' और दक्षिण में 'गणेश' की प्रतिमाओं की पूजा की जाती है। मंदिर के सामने स्थित 'शिवगंगा' नामक एक सुंदर तालाब 'शिवमहारा' नामक एक चैनल द्वारा बैतरणी से जुड़ा हुआ है। मंदिर के शीर्ष पर त्रिशूल रखा गया है। लिंगम के सामने मंदिर के अंदर लगभग 30 फीट का एक बड़ा छेद है। इसे भगवान का रहस्यमयी कमरा माना जाता है। ब्रिटिश काल के दौरान, एक बार एक अधिकारी ने एक विशाल चट्टान से ढँके छेद को खोलने की कोशिश की, लेकिन एक साँप की फुफकार की आवाज़ ने उसे खोलने से रोक दिया। यह एक रहस्य बना हुआ है क्योंकि भगवान का अस्तित्व अपने आप में एक रहस्य है।

अब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा मंदिर का संरक्षण और देखभाल किया जाता है। इसे एक ट्रस्टी बोर्ड द्वारा चलाया जाता है। दैनिक अनुष्ठानों की देखभाल के लिए हिंदू बंदोबस्ती आयोग अधिनियम के तहत ओडिशा सरकार द्वारा एक प्रबंधक और कुछ कर्मचारियों की भर्ती की गई है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि 'अरडी' भारत के सांस्कृतिक मानचित्र में एक प्रमुख स्थान रखता है।



मेरी जगन्नाथ पुरी की यात्रा

श्री मिन्टू हालदार

लेखापरीक्षक

कोई भी लंबे समय तक नीरस काम करना पसंद नहीं करता है। कभी-कभी आपको यात्रा पर जाना पड़ता है। हमेशा बहुत दूर नहीं बल्कि आस-पास कहीं यात्रा करके भी आनंद प्राप्त किया जा सकता है। इस साल हम आसपास की ऐसी ही एक जगह घूमने गए थे।

हमारे परिवार में पाँच सदस्य हैं। हमारे परिवार में हर कोई यात्रा करना पसंद करता है। जनवरी में मेरे पिता जब घर आए और कहा, कि हम अगले हफ्ते पुरी जा रहे हैं। मां तुरंत घूमने की तैयारी करने लगी। मैंने और मेरे भाई ने अपना सारा सामान पैक करना शुरू कर दिया। मैंने जगन्नाथ एक्सप्रेस से पुरी जाने के लिए कहा। जनवरी की एक सर्द रात को हम हावड़ा स्टेशन की ओर बढ़े। सुबह मैं ट्रेन से उतरा और होटल जाने के लिए ऑटो लिया। होटल समुद्र के पास ही था। समुद्र तट पहुँचने से पहले ही एक भयानक गर्जना सुनी। ऐसा लगा मानो समुद्र हमारा स्वागत कर रहा है।

समुद्र का पहला नजारा

हमलोगों ने समुद्र के किनारे एक होटल में पहले ही एक कमरा बुक कर लिया था। मैं स्टेशन से निकला और होटल के लिए ऑटो लिया। कुछ दूर जाने के बाद कानों में समुद्र की गर्जना हुई। आँखों ने नीले रंग का अंतहीन विस्तार देखा। समुद्र सफेद झाग वाला पानी लिए दौड़ रहा है - लहर के बाद लहर। जहां तक मैं देख सकता हूँ, यहाँ सिर्फ पानी और पानी है। होटल पहुँचने के बाद मैंने थोड़ी देर आराम किया और समुद्र के किनारे आ गया। वहाँ रेत में कई लोग थे, कोई बैठा है, कोई नहा रहा है, कोई सीप ढूँढ़ रहा है, कोई तस्वीरें लेने में व्यस्त है। अचानक एक लहर आई और पैरों को भिगो दिया। समुद्र को देखकर मन अजीब सी खुशी से भर गया, दोपहर के स्नान के बाद होटल लौट आया।

मंदिर दर्शन

अगले दिन सुबह नहाकर हम सब ऑटो से मंदिर गए। मेरे पिता को एक पांडा जानते थे। उनके नियमों के अनुसार, हमने पूरे मंदिर के दर्शन किए और पूजा की। दोपहर में मैं उनके कहे अनुसार फिर से मंदिर गया और मंदिर के शीर्ष पर झंडा फहराता देख हैरान रह गया। जिस तरह मेरे जैसा या मुझसे छोटा लड़का मंदिर की चोटी पर चढ़कर झंडा लटकाता है यह देखते हुए भी अकल्पनीय लगता है।

पर्यटन

सिर्फ पुरी ही नहीं, हमने कोणार्क, उदयगिरि, खंडगिरि, चिल्का, लिंगराज मंदिर, नंदनकानन आदि विभिन्न स्थानों का दौरा किया। मैंने शॉपिंग भी खूब किया। कोणार्क के सूर्य मंदिर की वास्तुकला और शिल्प कौशल ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया। कुल मिलाकर, ओडिशा भारत के सबसे अच्छे यात्रा स्थलों में से एक है। सभी मौसमों में, सबसे सुखद अनुभव के लिए सर्दियों के दौरान यात्रा की योजना बनाना सबसे अच्छा है।



भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान

श्री लोकनाथ सुतार

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

भितरकनिका भारत के ओडिशा राज्य में स्थित एक संरक्षित क्षेत्र है। इसकी स्थापना 1998 में हुई थी। यह उद्यान कई लुप्तप्राय प्रजातियों सहित वनस्पतियों और जीवों की एक विविध श्रेणी का आश्रय है। भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान अपने मैंग्रोव वनों के लिए प्रसिद्ध है। ये मैंग्रोव वन भारत के सबसे बड़े वनों में से एक है। पार्क में विशाल मैंग्रोव वन और एक अनूठा डेल्टा क्षेत्र है। यह खारे पानी के मगरमच्छों का आश्रय है। अपनी पारिस्थितिक महत्ता के लिए पहचाना जाने वाला भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान संरक्षण प्रयासों में योगदान देता है और इकोटूरिज्म को बढ़ावा देता है।



यह पूर्वी भारत में ओडिशा के केंद्रपाड़ा जिले में स्थित है। पार्क का कुल क्षेत्रफल 672 वर्ग किलोमीटर है। इसमें 145 वर्ग किलोमीटर का मुख्य क्षेत्र शामिल है। पार्क में 60 से अधिक किस्म के मैंग्रोव पाए जाते हैं। पार्क में कई मुहाने हैं। इसमें धामरा नदी भी शामिल है, जो पार्क का सबसे बड़ा मुहाना है। ये मुहाना समुद्री जीवों की कई प्रजातियों का आश्रय है, जिसमें खारे पानी के मगरमच्छ भी शामिल हैं। भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान में कई आर्द्रभूमि हैं। भितरकनिका झील और गुप्ती झील इनमें से कुछ नाम हैं। ये आर्द्रभूमि कई तरह के जलीय पक्षियों के लिए महत्वपूर्ण प्रजनन स्थल हैं। पार्क में कई सैंडबार हैं, जिनमें हुकीटोला और अगरानसी सैंडबार शामिल हैं। ये सैंडबार समुद्री कछुओं (ऑलिव रिडले) की कई प्रजातियों के लिए घोंसले के शिकार स्थल प्रदान करते हैं। पार्क में कई समुद्र तट हैं, जिनमें गहिरमाथा बीच भी शामिल है। यह समुद्र तट पर्यटकों के लिए भी एक लोकप्रिय गंतव्य है।



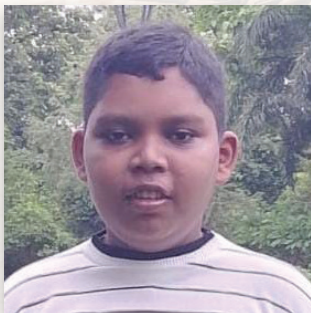
कंटीलो और नीलमाधव की कहानी

सुश्री अन्नपूर्णा नायक

सुपुत्री- श्री पञ्चु नायक, एम्.टी.एस.

ओडिशा के नयागढ़ जिला में स्थित कंटीलो का नीलमाधव मंदिर एक ऐतिहासिक और पौराणिक स्थल है। यह स्थान भगवान जगन्नाथ के प्रारंभिक रूप नीलमाधव से जुड़ा हुआ है। इसके पीछे एक सुंदर और प्रेरणादायक कहानी है जो श्रद्धालुओं के लिए बहुत महत्व रखती है।

बहुत समय पहले, नीलांचल के घने जंगल में एक अद्भुत मूर्ति थी। यह मूर्ति भगवान विष्णु के रूप नीलांचल की थी, जो नीले पत्थर से बनी हुई थी जिसे घने जंगल में छुपा कर रखा गया था। माना जाता है कि यह मूर्ति चमत्कारी है और जिसने भी इसे देखा उसकी सभी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं।



चर्चिका मंदिर

श्री शुभम नायक

सुपुत्री- श्री पञ्चु नायक, एम्.टी.एस.

चर्चिका मंदिर ओडिशा के कटक जिले के बैड़ामल गांव में स्थित है। यह मंदिर देवी चर्चिका को समर्पित है जो देवी दुर्गा का एक रूप है यह स्थान न केवल अपने धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है बल्कि इसके पीछे की कथा भी अत्यंत रोचक और प्रेरणादायक है।

प्राचीन काल में बैड़ामल के घने जंगल में एक राक्षस ताम्रसुर ने अपना आतंक मचा रखा था। वह ऋषि मुनियों को परेशान करता और उनके यज्ञों को नष्ट कर देता। राक्षस के अत्याचारों से धरती पर अराजकता फैल गई और सभी देवता परेशान हो गए। देवताओं ने मिलकर देवी दुर्गा से प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना से देवी ने अपने चर्चिका रूप में अवतार लिया और राक्षस का संहार किया।



अंडमान यात्रा

श्री सूरज कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

भारत में अंडमान एक ऐसा पर्यटन स्थल है जहाँ स्वच्छन्द रूप से प्रकृति का आनंद लिया जा सकता है। वहाँ पर बी.एस.एन.एल को छोड़ दूसरी सेवा ठीक से काम नहीं करती है, जिसके कारण आप कुछ समय के लिए पूरी दुनिया से हटकर तनावमुक्त महसूस करेंगे। यहाँ आप आजादी के साथ जो चाहें वो पहन सकते हैं, यहाँ कोई रोक-टोक नहीं है। अगर आपको समुद्र एवं पहाड़ के सौन्दर्य का रसपान एक साथ करना हो तो अंडमान से बेहतर कुछ भी नहीं हो सकता। इसकी तुलना विदेशी पर्यटन स्थलों से की जा सकती है।

वर्ष 2016 में मुझे भी अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के सौन्दर्य का रसपान करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं सिर्फ अंडमान का नाम सुनकर ही रोमांचित हो उठा। अपने कौतूहल को शांत करने के लिए अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से अंडमान के बारे में जानना चाहा तो मुझे पता चला कि अभी तक किसी ने भी अंडमान की यात्रा नहीं की है। मुझे खुशी के साथ डर भी लग रहा था कि मैं उन सबमें पहला व्यक्ति होऊंगा जो अंडमान की यात्रा करेगा।

मेरी यात्रा की शुरुआत कोलकाता महानगर से होती है, जहाँ से मुझे अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्टब्लेयर के लिए उड़ान भरनी थी। मेरी उड़ान सुबह 6:30 बजे की एयर इंडिया विमानन सेवा के साथ थी। सामान्यतः उड़ान भरने के लिए हवाई अड्डा प्रस्थान समय से दो घंटे पहले पहुँचना पड़ता है इसलिए रात को जल्दी सोना पड़ा। मैं सवेरे मुर्गे के बांग देने से पहले उठकर तैयार हो गया और एयरपोर्ट की ओर रवाना हो गया। सुबह-सुबह सड़क पर कोई ट्रैफिक नहीं होने के कारण मैं एयरपोर्ट जल्दी पहुँच गया। समय पूर्व एयरपोर्ट पहुँचने पर मैंने राहत की साँस ली। सारी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद मैं प्लेन में जाकर खिड़की वाली सीट पर बैठ गया। विमान जब आसमान में बादलों के बीच पहुँचा तो ऐसा लग रहा था कि जैसे मैं स्वर्ग में हूँ, जिस प्रकार फिल्मों में बादलों के बीच स्वर्ग होता है ठीक वैसी ही अनुभूति मुझे इस समय हो रही थी। प्रस्थान के दो घंटे के बाद हवाई जहाज वीर सवारकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, पोर्टब्लेयर पहुँचा। विमान से उतरने के बाद मैं होटल चला गया।

पहला दिन

सेल्यूलर जेल

होटल में आराम करने के बाद मैं कार्बिन कोव बीच पर गया। कार्बी बीच भ्रमण के बाद मैं सेल्यूलर जेल पहुँचा। यहाँ अंग्रेजों के शासनकाल में काले पानी की सजा दी जाती थी। यह एक ऐसा जेल है, जो समुद्र से घिरा है। इसकी कोठरियाँ बहुत छोटी हैं और गेट मजबूत लोहे के बने हुए हैं। यहाँ कैदियों से नारियल का तेल



निकलवाया जाता था। इसी जेल में एक सेल प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी वीर दामोदर सावरकर का भी था। ‘लाइट्स एंड साउंड एक्टिविटी’ इस जेल का प्रमुख आकर्षण है, जहाँ रात्रि में प्रकाश एवं आवाज के माध्यम से इस जेल का इतिहास एवं क्रांतिकारियों का दर्द बयां किया जाता है। इस दौरान इस जेल की दास्तान सुनकर आँखों में आँसू में आ गए।

दूसरा दिन

नार्थ बे आइलैंड

अगर आपको समुद्र के अन्दर के जीवन का दर्शन करना है तो नार्थ बे द्वीप उपयुक्त जगह है। यह द्वीप वाटर एक्टिविटी के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पहुँचने पर विभिन्न वाटर एक्टिविटी के बारे में बताया गया, जो मेरे जेब पर भारी पड़ रहा था, फिर भी मैंने सोचा कि जब इतनी दूर आया हूँ तो कुछ करके जाऊँगा, ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलता है। फिर मैंने स्कूबा डाइविंग करने की ठानी। इसमें मुँह में दांतों के बीच आक्सीजन की पाईप को पकड़ना पड़ता है, जिसका सिलिंडर पीठ पर बंधा होता है। पैरों में बत्तख के पैरों की तरह लम्बे जूते पहनने पड़ते हैं। आँखों में मैग्निफाइंग चश्मे लगाकर समुद्र के अंदर जाया जाता है। मुझे कुछ लोगों ने डरा दिया कि समुद्र के अन्दर मगरमच्छ आएगा तो क्या करोगे? फिर भी मैंने कहा, जो होगा देखा जाएगा, ‘डर के आगे जीत है।’ समुद्र के भीतर जाने के लिए अलग से स्वीमिंग सूट पहनकर पानी में उतरा।

ट्रेनर द्वारा पहले पाँच मिनट का प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने बताया कि पानी के अंदर आपको नाक से नहीं बल्कि मुँह से पाईप द्वारा आक्सीजन लेना होगा और इसे बाहर नहीं निकल सकते। पानी के अन्दर आप बोल नहीं सकते सिर्फ इशारे कर सकते हैं। अगर सब कुछ ठीक है तो थम्स अप (अंगूठा ऊपर की ओर) करना है और अगर जरा भी तकलीफ हो तो थम्स डाउन करना है। पानी के अन्दर अगर कानों में दर्द महसूस हो तो नाक और



मुँह बंद करके कान से साँस छोड़ने की कोशिश करना है। जब मैं जल के अन्दर गया तो अपने आप को जलपरी की भांति महसूस कर रहा था। अंदर नीले पानी में तरह-तरह की रंग-बिरंगी मछलियाँ तैर रही थीं। कुछ मछलियाँ कानों के पास आकर गुदगुदी कर रही थीं तो कुछ आँखों के सामने कलाबाजियाँ कर रही थीं पर हाथ कोई न आती थी। अंदर कोरल रीफ (जीवित पत्थर) भी देखने को मिला जिसे छूने से उसके मुख बंद हो गए। जल के अंदर मैंने देखा कि स्कूबा डाइविंग का क्षेत्र मोटे जालों से घिरा हुआ था ताकि बाहरी बड़ी मछलियाँ या मगरमच्छ भीतर प्रवेश न कर सकें। इससे मुझे काफी राहत महसूस हुई। पानी से बाहर निकलने के बाद मैंने भोजन किया और उसी नाव से वापस पोर्टब्लेयर लौट गए।

तीसरा दिन

आज मेरा प्लान नील द्वीप जाने का था। नील द्वीप जाने के लिए मैंने प्राइवेट जहाज ‘मैक क्रूज’ का टिकट लिया। इसमें सवार होने के लिए बिलकुल एयरपोर्ट वाली औपचारिकतायें पूरी करनी होती है, इसमें अंतर बस इतना था कि प्लेन पकड़ने के हवाई अड्डा जाना पड़ता था और क्रूज में सवार होने के लिए बंदरगाह जाना पड़ा। क्रूज अपने निर्धारित समय से खुली। इसमें शीशे की बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ लगी हुई थीं, जिससे मैंने समुद्र और आसमान का मिलन देखा। फिर समुद्री यात्रा की कुछ तस्वीरें भी लीं। अंत में मैं नील द्वीप पहुँचा। नील आइलैंड की जमीन समतल होने के कारण यहाँ धान एवं केले के खेत दिखाई दिए, जो यहाँ के लोगों जीविकोपार्जन का स्रोत हैं।

हावड़ा ब्रिज (नेचुरल ब्रिज)

नील आइलैंड पहुँचकर सबसे पहले हावड़ा ब्रिज देखा जो कि बिना पाए का एक प्राकृतिक कोरल पुल था। इसी पुल से प्रेरित होकर कोलकाता में हावड़ा ब्रिज का निर्माण किया गया था। इस पुल तक पहुँचने के लिए पथरीले रास्तों को पार करना पड़ा जो कि बहुत मजेदार लगा। यहाँ पहली बार मैंने स्टार फिश एवं ऑक्टोपस देखा। यहाँ का जल इतना निर्मल था कि समुद्र तल को बिलकुल साफ़-साफ़ देखा जा सकता था। यहाँ मृत पड़े कोरल (पत्थर) बहुत खूबसूरत थे।



अंतिम दिन

आखिरी दिन मैंने शहर भ्रमण किया। शहर की सड़कें कहीं भी समतल नहीं थी, कहीं चढ़ाव तो कहीं ढलान। चेन्नई पास होने के कारण यहाँ पर ग्रीसरी का सामान चेन्नई से ही आता था। यहाँ के लोग बहुत प्यारे और ईमानदार थे। यहाँ खाने-पीने की सारी चीजें उपलब्ध थीं। पर्यटक यहाँ समुद्री भोजन (केकड़े, झींगा मछली इत्यादि) में ज्यादा रूचि दिखाते थे। ये सारे जीवित रूप में शीशे में रखे जाते हैं, आपको जो भी पसंद है उसे ताजा बनाकर पेश किया जाता है। दिन में मैंने एंथ्रोपोलॉजी संग्रहालय, फिशरीज संग्रहालय, कैथम शॉ (लकड़ी काटने का मिल), समुद्रिका नौसेना संग्रहालय, साइंस सेंटर का भ्रमण किया।

शाम में खरीददारी के लिए मैं आबरदीन बाजार निकला। यहाँ पर एक अच्छी चीज यह थी कि नकदी निकालने के लिए ए.टी.एम. उपलब्ध थे। यहाँ तरह-तरह की दुकानें सजीं थीं, जहाँ शंख, सीप एवं भिन्न-भिन्न प्रकार के समुद्री सामान मिल रहे थे। सौ रुपए में 'आई लव अंडमान' प्रिंट किए हुए टीशर्ट भी मिल रहे थे। सीपियों से बने नोज रिंग, ईयर रिंग, शंख से बने चाभी रिंग, कंगन इत्यादि इस बाजार में सस्ते में मिल रहे थे। यहाँ पर पर्यटकों को परेशान नहीं किया जा रहा था, उन्हें आजादी के साथ सामान खरीदने दिया जा रहा था। अगर आप दाम पूछकर सामान नहीं भी खरीदना चाहें तो कोई दुकानदार आपको कुछ नहीं बोलेगा। शॉपिंग करके मैं होटल लौट गया। अगली सुबह फिर हवाई जहाज से कोलकाता वापस लौट गया।



अंडमान यात्रा कभी न भूलने वाली यात्रा थी। यहाँ का आजाद शांतिपूर्ण जीवन मुझे बहुत भाया। अंडमान में रहने पर आप अपने आपको इस भाग-दौड़ भरी जिंदगी से दूर एक अलग दुनिया में पाएँगे। अंडमान के विषय में सबसे अच्छी बात यह लगी कि आप यहाँ स्वच्छन्द रूप से कहीं भी घूम सकते हैं। यहाँ के टूर गाइड बेहद मृदुभाषी होते हैं, वे कभी भी पर्यटक पर गुस्सा नहीं करते। यहाँ के लोग एवं दुकानदारों का भी व्यवहार काफी सहयोगात्मक लगा। इस यात्रा की यादें हमेशा मेरी स्मृति में रहेंगी।

हिंदी कार्यशाला की कुछ झलकियाँ



हिंदी पखवाड़ा की कुछ झलकियाँ



राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव

- उपस्थिति पंजी में हस्ताक्षर एवं सहकर्मियों से वार्तालाप हिंदी में करें।
- फाइलों पर विषय अनिवार्य रूप से हिंदी या द्विभाषी में लिखें।
- कंप्यूटर में यूनिकोड/देवनागरी लिपि का प्रयोग करें।
- धारा 3(3) से संबंधित कागजात हिंदी/द्विभाषी में ही जारी करें।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्यतः हिंदी में दें।
- सभी फाइल कवर, पत्र शीर्ष, नामपट्ट, साईनबोर्ड व रबर स्टाम्प द्विभाषी में उपयोग करें।
- मानक मसौदे एवं प्रपत्र केवल हिंदी/द्विभाषी में प्रयोग करें।
- हिंदी न जानने वालों को हिंदी सीखने में सहयोग, प्रोत्साहन व मार्गदर्शन दें।